INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET

(मुख्य परीक्षा हेतु)

Level – 2

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 1

राजस्थान का भूगोल + इतिहास + संस्कृति + भाषा

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2 हेतु)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें/*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/ny6pbb

Online Order करें - https://shorturl.at/liVK0

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

राजस्थान का भूगोल

1. स्थिति एवं विस्तार	1
2. राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप	17
3. मानसून तंत्र एवं जलवायु	27
4. (अपवाह तंत्र) - नदियाँ, झीलें एवं बाँध	31
5. एनीकट, जल संरक्षण विधियाँ एवं तकनीकियाँ	54
6. राजस्थान की वन संपदा	56
7. वन्य जीव-जंतु वन्य जीव संरक्षण एवं अभ्यारण्य	71
8. मृदाएँ एवं मृदा संरक्षण	66
9. राजस्थान की प्रमुख फसलें	70
10. जनसंख्या, जनसंख्या-घनत्व, साक्षरता, और लिंगानुपात	77
11. राजस्थान की जनजातियाँ एवं जनजातीय क्षेत्र	83
12. धात्विक एवं अधात्विक खनिज	85
13. राजस्थान के ऊर्जा संसाधन : परम्परागत एवं गैर परम्परागत	94
14. राजस्थान के पर्यटन स्थल	103
15. राजस्थान में यातायात के साधन	108

16. पशुधन एवं पशु मेले (एक्स्ट्रा) 115

इतिहास एवं संस्कृति

1. राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ 122

- कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर, बालाथल और बैराठ इत्यादि

2. राजस्थान की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ, प्रमुख राजवंश 126

3. प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था 171

4. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 179

5. 1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान 192

6. राजस्थान में जनजाति एवं किसान आंदोलन 199

7. प्रजामण्डल 210

8. राजस्थान का एकीकरण 220

कला एवं संस्कृति

1. राजस्थान की स्थापत्य कला, किले स्मारक महल इत्यादि 224

2. बावड़ी एवं हवेलियाँ 234

3. राजस्थान के मेले एवं त्यौहार 239

4. लोक कला, लोक संगीत 248

5. लोक नाट्य एवं लोक नृत्य 252

6. राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा एवं विरासत 258

7. राजस्थान के धार्मिक आंदोलन प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय 267

- राजस्थान के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल 273

8. लोक देवता एंव लोक देवियाँ 274

9. राजस्थान के वस्त्र एवं आभूषण 280

10.राजस्थान की चित्रकलाएँ एवं हस्तशिल्प 282

राजस्थानी भाषा

1. राजस्थान की क्षेत्रीय बोलियाँ 288

2. प्रमुख राजस्थानी कृतियाँ एवं प्रमुख राजस्थानी साहित्यकार 292

3. राजस्थनी संत साहित्य एवं लोक साहित्य 296

राजस्थान का भूगोल

अध्याय – I

स्थिति एवं विस्तार

प्रिय छात्रों, राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख राजस्थानी साहित्य विक्रम संवत 682 ई. में उत्कीर्ण बसंतगढ़ (सिरोही जिला) के शिलालेख में मिलता है।
मारवाड़ इतिहास के प्रसिद्ध लेखक "मुहणोत नैणसी"ने भी अपनी पुस्तक "नैणसी री ख्यात" में भी राजस्थान शब्द का प्रयोग किया है, लेकिन इस पुस्तक में यह शब्द भौगोलिक प्रदेश राजस्थान के लिए प्रयुक्त हुआ नहीं लगता।
महर्षि वाल्मीकि ने राजस्थान की भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुकान्तार" शब्द का उल्लेख किया है।
लॉर्ज थॉमस पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने सन 1800 ई. में इस भौगोलिक क्षेत्र को "राजपूताना" शब्द कहकर पुकारा। इस तथ्य का वर्णन विलियम फ्रैंकलिन ने अपनी पुस्तक **"मिलिट्री मेमोरीज ऑफ़ मिस्टर थॉमस"** में किया है।
लॉर्ज थॉमस:- लॉर्ज थॉमस एक आयरलैंड के सैनिक थे जो कि 18वीं. सदी में भारत आए और 1798 से 1801 तक भारत में एक छोटे से क्षेत्र (हिसार-हरियाणा) के राजा रहे। इन्होंने राजस्थान को "राजपूताना" शब्द इसलिए कहा क्योंकि मध्यकाल एवं पूर्व आधुनिक काल में राजस्थान में अधिकांश राजपूत राजवंशों का शासन था। ब्रिटिश काल में इस क्षेत्र को "राजपूताना" कहा जाता था।
विलियम फ्रैंकलिन:-विलियम फ्रैंकलीन मूल रूप से लंदन के निवासी थे। यह लॉर्ज थॉमस के घनिष्ट मित्र थे। उन्होंने 1805 लॉर्ज थॉमस के ऊपर "A Military Memories of George Thomas" नामक पुस्तक लिखी थी।
अकबर के नवरत्नों में से एक मध्यकालीन इतिहासकार **"अबुल फजल"** ने इस भौगोलिक क्षेत्र के लिए **"मरुभूमि"** शब्द का प्रयोग किया है।
1829 ईस्वी में "कर्नल जेम्स टॉड" ने अपनी पुस्तक **"एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान"** में सर्वप्रथम राजस्थान को **"रजवाड़ा"** या राजस्थान का नाम दिया था।
कर्नल जेम्स टॉड:- कर्नल जेम्स टॉड 1818 से 1821 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रांत में एक पॉलिटिकल (राजनीतिक) एजेंट थे तथा कुछ समय तक मारवाड़ रियासत के ब्रिटिश एजेंट भी रहे। कर्नल जेम्स टॉड इंग्लैंड के मूल निवासी थे, उन्होंने अपने घोड़े पर घूम - घूम कर राजस्थान के इतिहास लेखन का कार्य किया इसलिए इन्हें घोड़े वाले बाबा के नाम से भी जाना जाता है।
कर्नल जेम्स टॉड को **"राजस्थान के इतिहास का पितामह"** कहा जाता है।
कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" को **"सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया"** के नाम से भी जानते है।
इस पुस्तक का पहली बार हिंदी अनुवाद राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार **"गौरीशंकर -हीराचन्द ओझा"** ने किया था। इसे हिंदी में **"प्राचीन राजस्थान का विश्लेषण"** कहते है।
महाराज भीम सिंह ने कर्नल की सेवाओं से प्रभावित होकर गांव का नाम **"टॉडगढ़"** रख दिया था, जो कालांतर में टाडगढ़ कहलाने लगा जोकि आज ब्यावर जिले की तहसील का मुख्यालय है।

(ख) राजस्थान की स्थिति:-

1. **राजस्थान की स्थिति "पृथ्वी" पर:-** पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति को समझने से पहले निम्नलिखित अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझना होगा-
(क) अंगारालैंड/युरेशियन प्लेट
(ख) गोंडवाना लैंड प्लेट
(ग) टेथिस सागर
(घ) पेंजिया
(ड) पेंथाल्जा

नोट:- प्रिय छात्रों, कृपया ध्यान दें कि – आज से करोड़ों वर्ष पहले पृथ्वी सिर्फ दो हिस्सों में बटी हुई थी

1. **स्थल**
2. **जल**

जैसा कि आज भी है, लेकिन वर्तमान में यदि हम स्थल मंडल को देखेंतो हमें यह कई भागों में विभाजित हुआ दिखता है, जैसे सात महाद्वीप अलग-अलग है। उनके भी कई देश एक-दूसरे से काफी अलग अलग है इत्यादि। लेकिन बहुत पहले संपूर्ण स्थलमंडल सिर्फ एक ही था; इसी स्थलीय क्षेत्र को **"पेंजिया"** के नाम से जानते थे तथा बाकी बचे हुए हिस्से को (जल वाले क्षेत्र को) **"पेंथाल्जा"** के नाम से जानते थे। अब इसे नीचे दिए गए मानचित्र से समझने की कोशिश कीजिए-

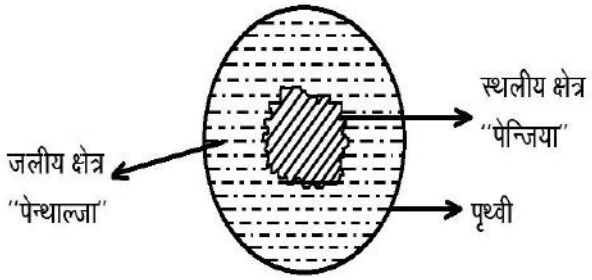

प्रिय छात्रों, पृथ्वी परिक्रमण एवं परिभ्रमण गति करती है अर्थात् अपने स्थान पर भी (1 दिन में) घूमती है, और सूर्य का चक्कर भी लगाती है। पृथ्वी की इस गति की वजह से स्थल मंडल की प्लेटों में हलचल होने की वजह से पंजिया (स्थलीय क्षेत्र) दो भागों में विभाजित हो गया जिसके उत्तरी भाग में उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी

एशिया का निर्माण हुआ इस स्थलीय क्षेत्र को "**अंगारा लैंड / यूरेशियन प्लेट**" के नाम से जानते है।
इसके दूसरे भाग (दक्षिणी) में दक्षिणी अमेरिका, दक्षिणी एशिया, अफ्रीका तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ, इस क्षेत्र को "**गोंडवाना लैंड**"'प्लेट' के नाम से जानते है।
दोनों प्लेटों के बीच में विशाल सागर था जिसे "**टेथिस सागर**" के नाम से जानते थे।- इसको नीचे दिए गए मानचित्र की सहायता से समझते हैं-

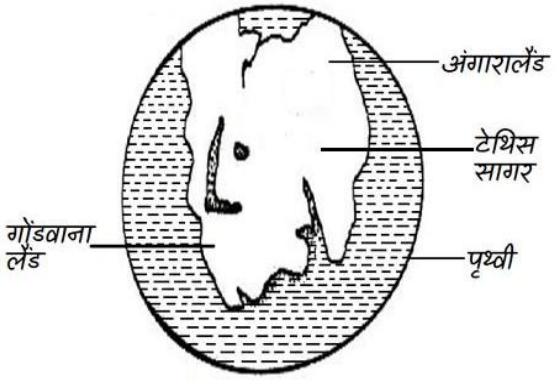

नोटः- राजस्थान का पश्चिमी रेगिस्तान तथा रेगिस्तान में स्थित खारे पानी की झीले "**टेथिस सागर**" के अवशेष हैं तथा राजस्थान का मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र (अरावली पर्वत माला) एवं दक्षिण पूर्वी पठार भाग "गोंडवाना लैंड" प्लेट के हिस्से है।

टेथिस सागर- टेथिस सागर गोंडवाना लैंड प्लेट और युरेशियल प्लेट के मध्य स्थित एक सागर के रूप में कल्पित किया जाता है जो कि एक छिछला और संकरा सागर था और इसी में जमा अवसादो के प्लेट विवर्तनिकी के परिणामस्वरूप अफ्रीकी और भारतीय प्लेटों के यूरेशियन प्लेट के टकराने के कारण हिमालय और आल्प्स जैसे महान पहाड़ों की रचना हुई है।

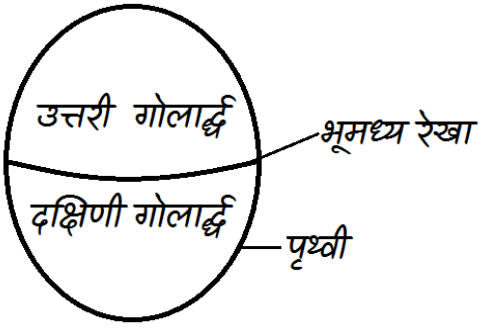

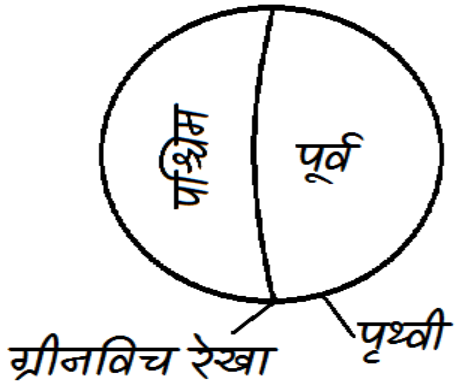

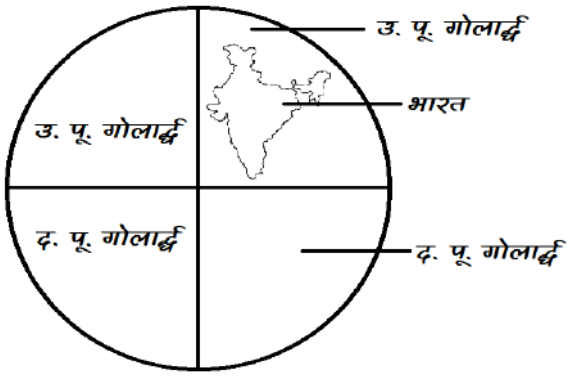

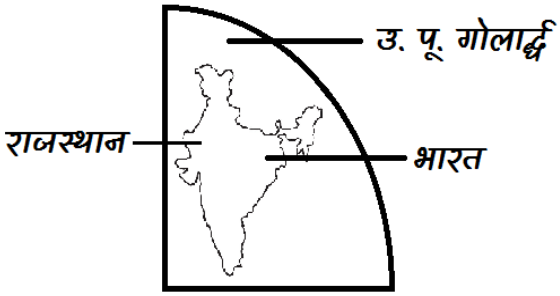

प्रिय छात्रों ऊपर दिए गए मानचित्र के बारे में एक बार समझते हैं।

मानचित्र-।

पृथ्वी को भूमध्य रेखा से दो भागों में बांटा गया है-

1. **उत्तरी गोलार्द्ध**
2. **दक्षिणी गोलार्द्ध**

इसी प्रकार ग्रीनविच रेखा पृथ्वी को दो भागों में बांटती है-

1. पूर्वी क्षेत्र
2. पश्चिमी क्षेत्र

(देखे मानचित्र- 2)

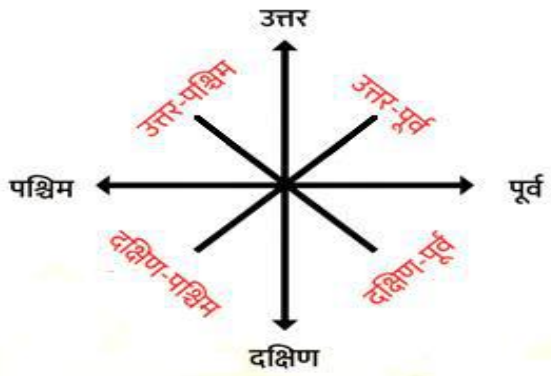

नोट-

1. विश्व (अर्थात् पृथ्वी पर) में राजस्थान "उत्तर पूरब" दिशा में स्थित है। (देखे मानचित्र-)
2. एशिया महाद्वीप में राजस्थान "दक्षिणी पश्चिम" दिशा में स्थित है। (देखिए मानचित्र - 3,4)
3. भारत में राजस्थान उत्तर-पश्चिम में स्थित है। देखिए मानचित्र -4 (भारत)]

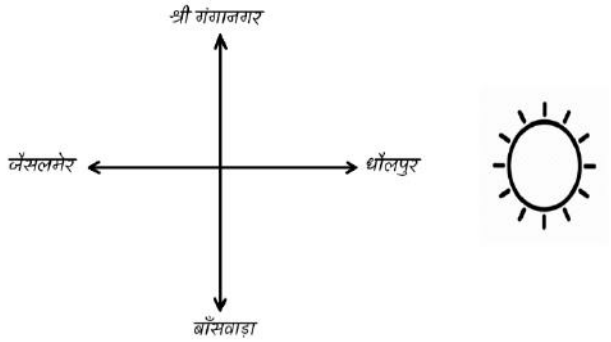

पूर्वी देशांतरीय भाग सूर्य के सबसे पहले सामने आता है, इस कारण सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त राजस्थान के पूर्वी भाग धौलपुर में होता है, जब कि सबसे पश्चिमी जिला जैसलमेर है। अतः जैसलमेर में सबसे अंत में सूर्योदय व सूर्यास्त होता है।

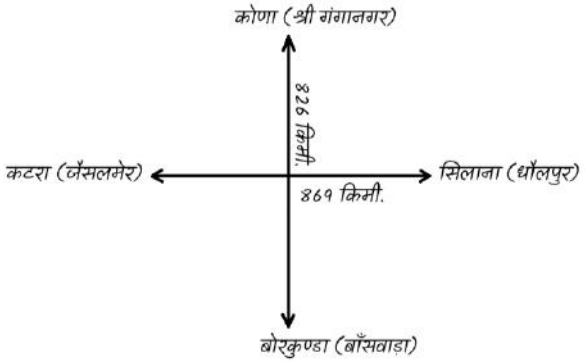

विस्तार:-

राजस्थान राज्य की उत्तर से दक्षिण तक की कुल लंबाई 826 किलोमीटर है तथा इसका विस्तार उत्तर में श्रीगंगानगर जिले के कोणा गांव से दक्षिण में बांसवाड़ा जिले की कुशलगढ़ तहसील के बोरकुंड गांव तक है।
इसी प्रकार पूरब से पश्चिम तक की चौड़ाई 869 किलोमीटर है तथा विस्तार पूरब में धौलपुर जिले के नगमोहनपुरा की ढाणी, सिलाना गांव से पश्चिम में जैसलमेर जिले के कटरा गांव (सम-तहसील) तक है।

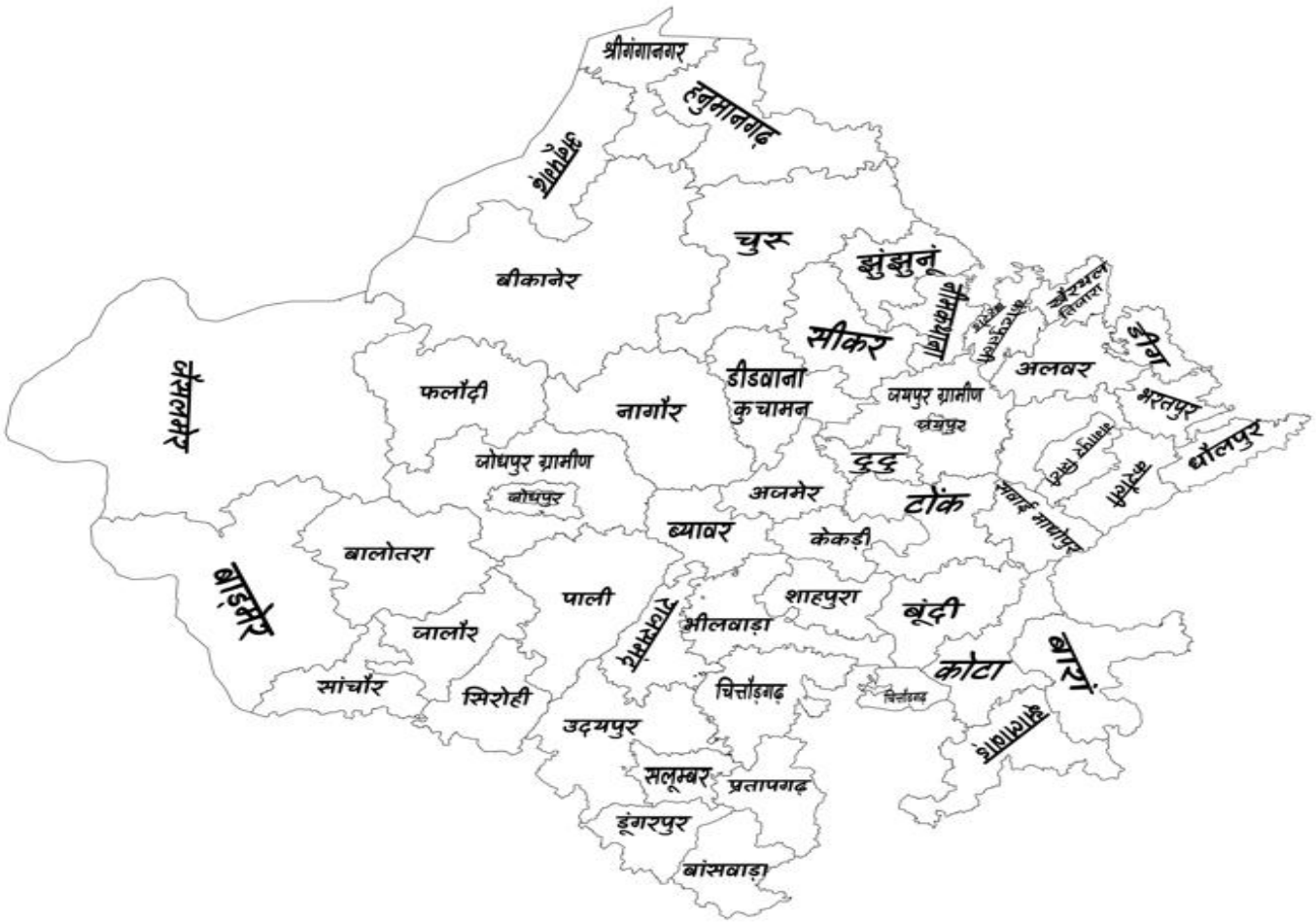

आकृति

विषम कोणीय चतुर्भुज या पतंग के आकार के समान है। राज्य की स्थलीय सीमा 5920 किलोमीटर (1070 अंतरराष्ट्रीय व 4850 अंतर्राज्यीय) है।

रेडक्लिफ रेखा

रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है। इसके संस्थापक सर सीरिल एम. रेडक्लिफ को माना

जाता है। इसकी स्थापना 14/15 अगस्त 1947 को की गई। इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3310 किलोमीटर है। रेडक्लिफ रेखा पर भारत के **तीन राज्य व दो केंद्र शासित प्रदेश** स्थितहै।

1. पंजाब (547 कि.मी.)
2. राजस्थान (1070 कि.मी.)
3. गुजरात (512 कि.मी.)

केंद्र शासित प्रदेश

1. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी. लद्दाख व J&K दोनों)
2. लद्दाख

रेडक्लिफ रेखा के साथ सर्वाधिक सीमा- **राजस्थान** (1070 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के साथ सबसे कम सीमा- गुजरात (512 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय- **श्रीनगर**

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दुर राजधानी मुख्यालय- **जयपुर**

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य- **राजस्थान**

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य- **पंजाब**

- रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा **1070 कि.मी.** है। जो **राजस्थान के पांच जिलों** से लगती है।

1. श्रीगंगानगर
2. अनूपगढ़
3. बीकानेर.
4. जैसलमेर- 464 कि.मी.
5. बाड़मेर- 228 कि.मी.

- रेडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में श्रीगंगानगर के **हिन्दूमल कोट** से लेकर दक्षिण - पश्चिम में बाड़मेर के बाखासर गाँव, सेडवा तहसील तक विस्तृत है।
- रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिले पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयारखान तथा सिंध प्रान्त के घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपाकर राजस्थान से सीमा बनाती है।

राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा – **बहावलपुर**

राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा- **खैरपुर**

पाकिस्तान के दो प्रांत राजस्थान की सीमा को छूते है।

1. पंजाब प्रांत
2. सिंध प्रांत

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- राजस्थान की रेडक्लिफ रेखा से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) की लगती है।
- रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय –अनूपगढ़
- रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय - बीकानेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे बड़ा जिला - जैसलमेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे छोटा जिला – **श्रीगंगानगर**

1. **अजमेर संभाग** – अजमेर संभाग में 7 जिले ब्यावर, शाहपुरा, डीडवाना-कुचामन, अजमेर, केकड़ी, टोंक, नागौर आते हैं।
2. **उदयपुर संभाग** – उदयपुर संभाग में 5 जिले आते हैं- उदयपुर, भीलवाडा, चित्तौड़गढ़, सलुम्बर, राजसमन्द। **ट्रिक – उदय भील** का **चित्तौड़** से **सलुम्बर** तक **राज** है।
3. **कोटा संभाग**- कोटा संभाग में 4 जिले (बारां, बूंदी, कोटा, झालावाड़) आते हैं।
4. **जयपुर संभाग** – जयपुर संभाग में 6 जिले (जयपुर, अलवर, खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, दौसा, दूदू) आते हैं।
5. **जोधपुर संभाग**- जोधपुर संभाग में 6 जिले (जोधपुर / जोधपुर ग्रामीण, बाड़मेर, फलौदी, बालोतरा, जैसलमेर)
6. **पाली संभाग** – पाली संभाग में 4 जिले (पाली, जालौर, सांचौर, सिरोही) शामिल हैं।
7. **बांसवाड़ा संभाग** – बांसवाडा संभाग में 3 जिले (बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़) शामिल हैं।
8. **बीकानेर संभाग** – बीकानेर संभाग में 4 जिले (श्री गंगानगर, हनुमानगढ़, अनूपगढ़, बीकानेर) शामिल हैं।
9. **भरतपुर संभाग** – भरतपुर संभाग में 6 जिले (भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, गंगापुरसिटी और डीग) शामिल हैं।
10. **सीकर संभाग** – सीकर संभाग में 4 जिले (झुंझुनू, सीकर, चुरू और नीमकाथाना) शामिल हैं।

अंतर्राष्ट्रीय सीमा

अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाले संभाग – बीकानेर व जोधपुर

- सर्वाधिक अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाला संभाग - जोधपुर
- न्यूनतम अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाला संभाग - बीकानेर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा के नजदीक संभागीय मुख्यालय - बीकानेर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा से दूर संभागीय मुख्यालय -जोधपुर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा संभाग - जोधपुर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर क्षेत्रफल में छोटा संभाग-बीकानेर

राजस्थान के वे जिले जो अंतर्राष्ट्रीय और अंतर्राज्यीय नहीं बनाते हैं।

22 जिले - (जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, बालोतरा, फलौदी, जालौर, पाली, राजसमन्द, शाहपुरा, केकड़ी, ब्यावर, अजमेर, टोंक, दौसा, बूंदी, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, दूदू, डीडवाना-कुचामन, सीकर, नागौर, सलुम्बर तथा गंगापुरसिटी)

अंतर्राज्यीय सीमा

- अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाले संभाग – 9
- केवल अंतरराज्यीय सीमा बनाने वाले संभाग – 7
- अंतर्राष्ट्रीय व अन्तर्राज्यीय दोनों सीमा बनाने वाले संभाग -2 (बीकानेर व जोधपुर)
- ऐसा संभाग जो न तो अंतर्राष्ट्रीय व न ही अन्तर्राज्यीय सीमा बनाता है – 1 (अजमेर)
- सर्वाधिक अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाला संभाग - उदयपुर
- अंतर्राज्यीय सीमा के नजदीक संभागीय मुख्यालय - भरतपुर
- अंतर्राज्यीय सीमा से दूर संभागीय मुख्यालय - जोधपुर
- अंतर्राज्यीय सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा संभाग -जोधपुर
- अंतर्राज्यीय सीमा पर क्षेत्रफल में छोटा संभाग – बांसवाड़ा संभाग
- दो बार अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाला संभाग -उदयपुर (चित्तौड़गढ़ के दो भाग)
- राजस्थान का मध्यवर्ती संभाग - अजमेर
- राजस्थान अपने **वर्तमान स्वरूप। नवम्बर 1956** को आया।
- वर्तमान में राजस्थान में 7 जिलों वाले 2 संभाग (जयपुर व अजमेर) हैं।
- 6 जिलों वाले दो संभाग (भरतपुर व जोधपुर) हैं।
- 5 जिलों वाला एक संभाग उदयपुर है।
- 4 जिलों वाले 4 संभाग (बीकानेर, सीकर, कोटा और पाली) हैं।
- 3 जिलों वाला एक संभाग बांसवाड़ा संभाग है।
- केवल एक संभाग की सीमा को स्पर्श करनें वाला संभाग – बांसवाड़ा
- राज्य के सर्वाधिक 8 संभागों की सीमा को स्पर्श करनें वाला संभाग – अजमेर
- तीन राज्यों की सीमा को स्पर्श करने वाला संभाग – भरतपुर संभाग
- सर्वाधिक नदियों वाला संभाग – कोटा संभाग
- सर्वाधिक नदियों वाला जिला – उदयपुर
- सर्वाधिक वर्षा एवं आर्द्रता वाला संभाग – कोटा संभाग
- राजस्थान का पूर्वी संभाग – भरतपुर संभाग
- राजस्थान का पश्चिमी संभाग – जोधपुर संभाग

प्रदेश के जिलों के आधुनिक उपनाम

गंगानगर	फलों की टोकरी, राजस्थान का अन्नागार, बागानों की भूमि
बीकानेर	राती घाटी, ऊन का घर
जैसलमेर	स्वर्ण नगरी, राजस्थान का अंडमान, हवेलियों का शहर, झरोखों की नगरी, रेगिस्तान का गुलाब, येलो सिटी, गलियों का शहर, पंखों का नगर, म्यूजियम सिटी
जोधपुर	ब्लू सिटी / नीला शहर, सन सिटी / सूर्य नगरी, मरुस्थल का प्रवेश द्वार / सिंहद्वार, राजस्थान की विधि नगरी
बाड़मेर	राजस्थान की थार नगरी, राजस्थान का खजुराहो

भीलवाड़ा	राजस्थान का मैनचेस्टर, वस्त्र नगरी, जू ऑफ़ मिनरल, टेक्सटाइल सिटी
सिरोही	राजस्थान का शिमला
राजसमन्द	राजस्थान की थर्मोपोली
नागौर	औजारों की नगरी, राजस्थान का धातु नगर
सीकर	हाईटेक सिटी
नीमकाथाना	ताम्बा नगरी
जयपुर	पिंक सिटी / गुलाबी नगरी, पूर्व का पेरिस, हेरिटेज सिटी
अलवर	राजस्थान का स्कॉटलैंड, राजस्थान का सिंह द्वार, राजस्थान का पूर्वी कश्मीर
भरतपुर	राजस्थान का पूर्वी सिंह द्वार, राजस्थान का प्रवेश द्वार
धौलपुर	राजस्थान का पूर्वी प्रवेश द्वार, रेड डायमंड
करौली	डांग की रानी
अजमेर	राजस्थान का हृदय, अंडे की टोकरी, सांप्रदायिक सौहार्द का शहर, राजपूताना की कुंजी, अरावली का अरमान
बूंदी	बावडियों का शहर (सिटी ऑफ़ स्टेपवेल्स), वैभव नगरी
बारां	वराह नगरी, मिनी खजुराहो (भंडदेवरा)
झालावाड़	राजस्थान का चेरापूंजी, विरासत का शहर, घंटियों का शहर (झालरापाटन)
चित्तौड़गढ़	राजस्थान का गौरव
प्रतापगढ़	राधा नगरी, कांठल
कोटा	शिक्षा का तीर्थ स्थल, राजस्थान का नालंदा, औद्योगिक नगरी, राजस्थान का कानपुर, उद्यानों का नगर
डूंगरपुर	पहाड़ों की नगरी
उदयपुर	मेवाड़, प्राग्वाट, मेदपाट, झीलों की नगरी, पूर्व का वेनिस, सैलानियों का स्वर्ग, माउंटेन और फाउंटेन का शहर, एशिया का विएना, लेक सिटी, जिंक नगरी, ऑस्ट्रेलिया जैसी आकृति

राजस्थान के प्राचीन क्षेत्र और वर्तमान स्थिति

योद्धेय प्रदेश	अनूपगढ़, गंगानगर, हनुमानगढ़
भटनेर	हनुमानगढ़
शेखावाटी प्रदेश	झुंझुनू, सीकर, चुरू, नीमकाथाना
कुरुक्षेत्र, शाल्व जनपद, आलोर	अलवर
मेवात क्षेत्र / मत्स्य प्रदेश	खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, अलवर, भरतपुर, डीग
श्रीपंथ	बयाना (भरतपुर)
कोठी	धौलपुर
गोपालपाल	करौली
डांग क्षेत्र, बीहड़	करौली, सवाईमाधोपुर
प्राचीन भारत का टाटा नगर, नवाबों का शहर	टोंक
हयहय प्रदेश, हाडौती प्रदेश	कोटा, बूंदी, झालावाड़, बारां
बृजनगर, खींचीवाड़ा	झालावाड़
मालव प्रदेश	झालावाड़, प्रतापगढ़
वार्गट	डूंगरपुर बाँसवाड़ा का दक्षिणी भाग
मेवल	बाँसवाड़ा व डूंगरपुर के मध्य का भू-भाग
शिवी जनपद	सिरोही
देवनगरी, चन्द्रावती, आर्बुद	सिरोही
श्रीमाल, बाहड़मेट, मालाणी	बाड़मेर
जलालाबाद, जाबालीपुर	जालौर
मांड प्रदेश, वल्ल, दुंगल	जैसलमेर
जांगल प्रदेश	बीकानेर
थली क्षेत्र	चुरू, हनुमानगढ़, बीकानेर, श्री गंगानगर (चारों की सीमा रेखा जहाँ मिलती है, के आस-पास का क्षेत्र)
रामू जाट की ढाणी	गंगानगर
जाट रियासत	भरतपुर, धौलपुर
मत्स्य संघ / शूरसेन	कोटपूतली-बहरोड़, डीग, अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर
अर्जुनायन	डीग, अलवर, भरतपुर
बांगड़ प्रदेश	झुंझुनू, सीकर, नीमकाथाना, डीडवाना-कुचामन, नागौर
सपादलक्ष	बीकानेर
चुन्धेर	अनूपगढ़
जांगल प्रदेश की राजधानी / अहिछत्रपुर	नागौर

भीलवाड़ा	*कोठारी नदी*
विजयनगर	*खारी नदी*
सूरतगढ़	*घग्घर नदी*
पाली	***बांडी नदी***
सुमेरपुर	*जवाई नदी*
आसींद	*खारी नदी*
सवाई माधोपुर	*बनास नदी*
बालोतरा	***लूनी नदी***
झुंझुनू	*कान्तली नदी*
नीमकाथाना	*कान्तली नदी*

जिला	***नदियों के नाम***
अजमेर	*डाई, लूनी*
उदयपुर	*सोम, साबरमती, बेड़च, बाकली*
अलवर	*साबी, गौरी, सोटा, काली, रूपारेल*
श्रीगंगानगर	*घग्घर*
कोटा	*(चंबल,पार्वती, कालीसिंध, परवन, निवाज)*
चित्तौड़गढ़	*(बनास, बामनी, बेड़च, बागन, बागली, औराई, सीबना, गंभीरी)*
चूरू	***कोई नदी नहीं है***
जयपुर	*(ढूंढ, बांडी, मोरेल, डाई, सीतामाशी, सखा)*
जोधपुर	*मीठड़ी (माठड़ी)*
जालौर	*(सूकड़ी, बांडी, जवाई, लीलड़ी)*
जैसलमेर	*काकन (काकनेन), चांथण, लाठी, धोगड़ी,*
झुंझुनू	*काँतली*
झालावाड़	*कालीसिंधी, छोटी कालीसिंध, निवाज, पार्वती, आहू*
डूंगरपुर	*(माही, सोम, सोनी, जाखम)*
बाँसवाड़ा	*माही, चेंनी, अन्नास*
नागौर	*लूनी*
बाड़मेर	*लूनी, सूकड़ी*
बीकानेर	***कोई नदी नहीं है***
भरतपुर	*गंभीर,बराह, बाणगंगा*
बूंदी	*कुराला, घोड़ा पछाड़, मेज, चंबल*
सीकर	*मेंथा, कांटली, कांवत*
सिरोही	*(सूकड़ी, पश्चिम बनास, खारी कृष्णावती, भूला, पोसलिया, ओरा, सुखदा)*
भीलवाड़ा	*बनास, बेड़च, कोठारी, मानसी, खारी, मेनाली*
सवाई माधोपुर	*बनास,चंबल, मोरेल*
धौलपुर	*चंबल*
दौसा	*बाणगंगा, मोरेल*
बारां	*पार्वती, परवन, कुकू*
राजसमंद	*बनास, चंद्रभान, खारी, कोठारी*
हनुमानगढ़	*घग्घर*
करौली	*चंबल, भद्रावती, गंभीर*
प्रतापगढ़	*जाखम, सूकली, भैंरवी*
अनूपगढ़	*घग्घर*
बालोतरा	*सूकड़ी, लूणी*
डीडवाना-कुचामन	*मेंथा नदी*
डीग	*रूपारेल*
फलौदी	***कोई नदी नही***
गंगापुरसिटी	*गंभीर*
दूदू	*ढूंढ, मानसी*
कोटपूतली-बहरोड़	*साबी, बाणगंगा*
खैरथल-तिजारा	*साबी*
नीमकाथाना	*कान्तली*
ब्यावर	*लूणी, खारी*
केकड़ी	*बनास, खारी*
सलूम्बर	*सोम, जाखम*
सांचौर	*लूणी, जवाई*
शाहपुरा	*बनास, खारी, कोठारी*
जयपुर ग्रामीण	*साबी, बाणगंगा, मेंथा*
जोधपुर ग्रामीण	*लूणी, जोजडी*
टोंक	*बनास, खारी*

राजस्थान की प्रमुख झीलें

प्रिय छात्रों राजस्थान की झीलों को हम दो भागों में विभाजित करेंगे -
(अ) खारे पानी की झीलें
(ब) मीठे पानी की झीलें

- *दोस्तों जैसा कि आपको पता है खारे पानी की झील से आशय ऐसी झील से होता है, जिसमें लवणता की मात्रा होती है और मीठे पानी की झील अर्थात् एक ऐसी झील जिसमे लवणता की मात्रा नहीं पाई जाती है ।*
- ***अरावली पर्वतमाला राजस्थान के लगभग बीच में स्थित है जिसके पश्चिम में खारे पानी की झीलें हैं और इसके पूर्व में मीठे पानी की झीलें स्थित है ।***
- *यह अरावली पर्वतमाला महान जल विभाजक रेखा का कार्य करती है।* ***राजस्थान में खारे पानी की ९ झीलें हैं।***
- *राजस्थान का पश्चिमी भाग* ***टेथिस सागर*** *का अवशेष है अतः इस क्षेत्र में पाई जाने वाली झीलें* ***खारे पानी की झीलें*** *है ।*

- *रेगिस्तानी क्षेत्र में खारे पानी की झीलों को **प्लाया** कहा जाता है तथा **तटीय क्षेत्र में इन्हें 'लैगून" कहा** जाता है, जैसे उड़ीसा में स्थित चिल्का झील सबसे बड़ी लैगून झील है।*
- *दोस्तों झीलों के खारा होने का एक अन्य कारण यह भी है कि दक्षिण पश्चिमी मानसून की अरब सागर की शाखा राज्य में प्रवेश करते समय लवण के भारी कणों को पश्चिमी भाग में गिरा देती है जिससे यहाँ की मिट्टी तथा झीलों में खारा पानी पाया जाता है ।*
- *राजस्थान की समस्त खारे पानी की झीलें वायु द्वारा निर्मित है ।*
- *दक्षिण एशिया में पहली बार विश्व झील सम्मेलन का आयोजन 28 अक्टूबर से 2 नवंबर 2007 को जयपुर में किया गया था।*

अब हम खारे पानी की झीलों को सबसे पहले विस्तार में समझते हैं और फिर मीठे पानी की झीलों को पढ़ेंगे।

<u>खारे पानी की झीलें –</u>

<u>खारे पानी की झीलें</u>

I. *सांभर झील*

- ***राजस्थान के जयपुर – फुलेरा मार्ग पर जयपुर से लगभग 65 किलोमीटर दूर स्थित सांभर झील भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक एवं खारे पानी की झील है।***
- *इस झील का विस्तार 3 जिलों में है – **जयपुर ग्रामीण, अजमेर और नागौर,** लेकिन सर्वाधिक विस्तार जयपुर जिले में है और इसका प्रशासनिक अधिकार नागौर जिले का है।*
- *इस झील की लंबाई दक्षिण - पूर्व से उत्तर - पश्चिम की ओर लगभग 32 किलोमीटर है और चौड़ाई लगभग 3 से 12 किलोमीटर है इसका कुल अपवाह क्षेत्र लगभग 500 वर्ग किलोमीटर है।*
- ***सांभर झील में मेंथा नदी, रूपनगढ़ नदी, खारी नदी और खंडेला नदी आकर मिलती हैं। इस झील पर भारत सरकार की "हिंदुस्तान साल्ट लिमिटेड कंपनी" द्वारा नमक उत्पादन कार्य किया** जा रहा है ।*

- हिंदुस्तान साल्ट लिमिटेड की स्थापना 1964 ई. में की गयी। इस झील में प्रति 4 मीटर की गहराई पर 350 लाख टन नमक उत्पादन होता है जो **भारत के कुल उत्पादन का 8.7% सांभर झील** से ही उत्पादित होता है।
- इसे 1990 ई. में रामसर साईट में शामिल किया गया। इस झील में **'क्यारी पद्धति'** द्वारा किया जाता है। सांभर झील में सर्दियों में फ्लेमिन्गोज (राजहंस) पक्षी उत्तरी एशिया से बड़ी संख्या में आते हैं।

इस झील से संबंधित अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य -

- **सांभर झील "स्वाईसरुबीना" नामक शैवालों के लिए प्रसिद्ध है।** इस शैवाल से 60% प्रोटीन प्राप्त होता है।
- यह झील अन्य महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं के लिए भी जानी जाती है जैसे -
- तीर्थ स्थली देव्यानी अर्थात् **तीर्थों की नानी**
- शाकंभरी माता का मंदिर
- संत हमीदुद्दीन की पुण्य भूमि
- जहाँगीर की ननिहाल
- अकबर की विवाह स्थली
- चौहानों की राजधानी

- ऐसा माना जाता है कि **इस झील का निर्माण बिजोलिया शिलालेख के अनुसार चौहान वंश के संस्थापक वासुदेव चौहान द्वारा** करवाया गया था।
- इस झील का आकार आयताकार है इस झील पर सन् 1857 में अंग्रेजों द्वारा स्थापित सांभर साल्ट म्यूजियम स्थित है।
- **पर्यटन के क्षेत्र में रामसर साइट के नाम से भी इसे जाना जाता है।**

2. पचपदरा झील

- ऐसा माना जाता है कि 400 ईसा पूर्व पंचा नामक एक भील व्यक्ति के द्वारा एक दलदल को सुखाकर इस झील के आसपास की बस्तियों का निर्माण करवाया गया था इसलिए इस झील को पचपदरा झील कहते हैं
- यह झील राजस्थान **राज्य के के बालोतरा जिलें में स्थित है।**
- इस झील में कुए बनाकर नमक उत्पादन किया जाता है। इन कुओं को **कोषियाँ** तथा इन कुओं से उत्पादित नमक को **कोशलू** कहा जाता है।
- इस झील से प्राचीन समय से ही **खारवाल जाति के 400 परिवार मोरली वृक्ष की टहनियों से भी नमक के (क्रिस्टल) स्फटिक तैयार** करते थे।
- **इस झील में 18% सोडियम क्लोराइड की मात्रा पाई जाती है इस झील का नमक खाने के लिए सबसे उपयुक्त है।**

3. डीड़वाना झील -

- यह झील **डीड़वाना-कुचामन जिले** में स्थित है।
- यहाँ निजी संस्थाओं द्वारा सर्वाधिक नमक उत्पादन किया जाता है। इन संस्थाओं को देवल कहा है।
- डीड़वाना में लवणीय पानी की क्यारियाँ बनाकर उसे सुखाकर नमक प्राप्त किया जाता है। **इस नमक ब्राइन नमक** कहा जाता है। इस झील से प्राप्त नमक **खाने योग्य नहीं** है।
- इस झील में राजस्थान सरकार द्वारा **राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स नामक दो उद्योग** स्थापित किए गए हैं जो **कृत्रिम रूप से कागज के उत्पादन का निर्माण करते हैं।** इसके अलावा इस नमक का उपयोग चमड़ा उद्योग में भी होता है।
- कृत्रिम रूप से कागज का उत्पादन करने के लिए **सोडियम सल्फेट का निर्माण इसी झील के** द्वारा किया जाता है।
- इस झील का क्षेत्रफल 4 वर्ग किलो मीटर है।
- यहाँ का नमक विभिन्न रासायनिक क्रियाओं में प्रयुक्त होता है।
- Na_2SO_4 वाले नमक का उपयोग चमड़ा साफ करने में, कागज गलाने में किया जाता है।

4. नावां झील

- यह झील डीडवाना-कुचामन में स्थित है।
- इस झील में भारत सरकार का **'आदर्श लवण फार्म (मॉडल साल्ट फार्म)'** विकसित किया गया है।

5. लूणकरणसर झील

- यह झील राजस्थान के **बीकानेर जिले में** स्थित अत्यंत छोटी झील है।
- छोटी होने के कारण यहाँ से थोड़ी बहुत मात्रा में निकलने वाले नमक से स्थानीय लोगों को ही आपूर्ति हो पाती है।
- **लूणकरणसर "मूंगफली" के लिए प्रसिद्ध होने के कारण "राजस्थान का राजकोट"कहलाता है।**

राजस्थान में अन्य खारे पानी की झीलें निम्न हैं :-

- रेवासा झील सीकर में स्थित है।
- कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक में रेवासा झील का उल्लेख किया है।
- तालछापर झील चूरू में स्थित है।
- **डेगाना झील नागौर में स्थित है।**
- फलौदी झील, बाप झील- फलौदी जिले में स्थित है। इस झील में राज्य का पहला कोयला संयंत्र स्थापित किया गया है।
- कावोद झील जैसलमेर में स्थित है।
- पोकरण झील जैसलमेर में स्थित है।
- कुचामन झील नागौर में स्थित है।

5. ***दांतरा*** *खेत में फसल को काटने के काम आता है। जैसे डोका, घास, कड़ब, रायड़ा, सरसों आदि काटने में।*
6. ***दांतरी*** *खेत में बाजरा तथा ज्वार के पौधों के सिरे (बाली) काटने के काम में आती है।*
7. ***बई*** *खेत में पाला, छोटी-बड़ी झाड़ियाँ, घास इकट्ठा करने व बाड़ा बनाने के काम में आती है।*
8. ***हाहीगी*** *खेत में कुत्तर (भूसा) भरने के काम में आती है।*
9. ***चारसींगी / चौंकनी*** *घास को इधर-उधर डालने एवं चारा (कुत्तर/भूसा) को भरने के काम में आता है।*
10. ***हल*** *खेत में बुआई के काम में आता है।*
11. ***खेड़ का हल*** *खेत में जुताई के काम में आता है।*
12. ***थ्रेसर*** *बाजरा, ज्वार, ग्वार, गेहूँ तथा सरसों आदि निकालने के काम में आता है।*
13. ***तवी*** *ट्रैक्टर के पीछे चलाकर खेत की जुताई की जाती है।*
14. ***कल्टीवेटर*** *ट्रैक्टर के पीछे चलाकर खेत में बुवाई की जाती है।*
15. ***कुत्तर*** *मशीन खेती में डोका, कड़ब, घास, सेवण, घामण, आदि को काटने के काम में आती है।*
16. ***दंताली*** *वर्मी कम्पोस्ट खाद में लगाने के काम में आता है। जिससे खाद को कीड़ा से बचाया जाता है।*
17. ***कुल्हाड़ी (कवाड़ी)*** *बड़ी झाड़ियों, काँटों को छाँगने या काटने के लिये।**गेंती*** *कठोर मिट्टी / मुरड़ खोदने के लिये।*
18. ***ओड़ी / ओड़ा*** *पशुओं को चारा एवं कचरा भरने के लिये*

राजस्थान की मंडिया

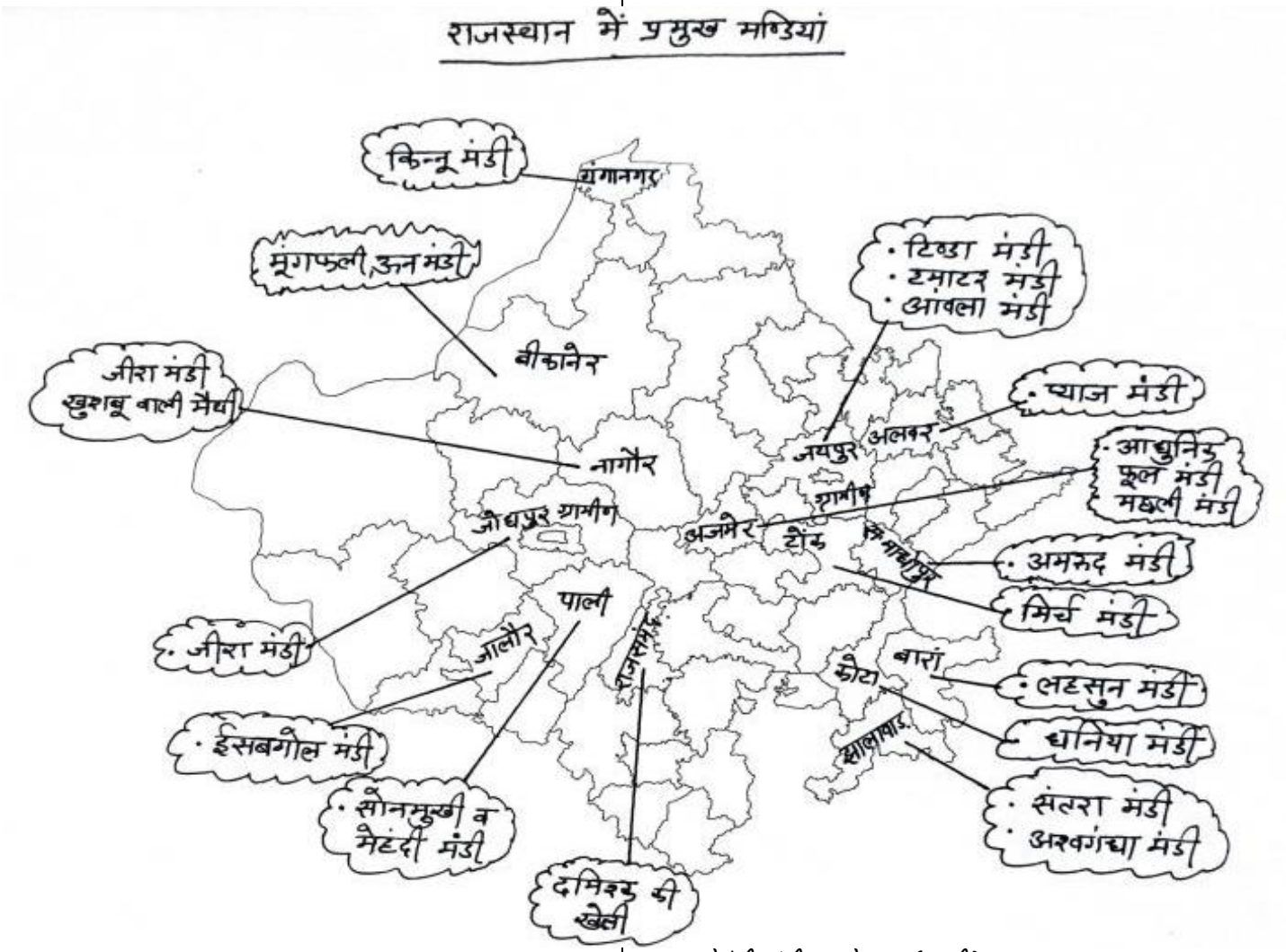

1. ***जीरा मंडी - मेडता सिटी (नागौर)***
2. ***संतरा मंडी - भवानी मंडी (झालावाड)***
3. *कीन्नू व माल्टा मंडी - श्रीगंगानगर*
4. *प्याज मंडी - अलवर*
5. *अमरूद मंडी - सवाई माधोपुर*
6. ***ईसबगोल (घोड़ाजीरा) मंडी - भीनमाल (जालौर)***
7. *मूंगफली मंडी - बीकानेर*
8. *धनिया मंडी - रामगंज (कोटा)*
9. ***फूल मंडी - अजमेर***
10. *मेहंदी मंडी - सोजत (पाली)*
11. *लहसून मंडी - छीपा बाडौद (बारां)*
12. ***अश्वगंधा मंडी -झालरापाटन (झालावाड़)***
13. *टमाटर मंडी - बस्सी (जयपुर ग्रामीण)*
14. *मिर्च मंडी - टोंक*
15. *मटर - बसेड़ी (जयपुर ग्रामीण)*
16. *टिण्डा मंडी - शाहपुरा (जयपुर ग्रामीण)*
17. ***सोनामुखी मंडी - सोजत (पाली)***
18. ***आंवला मंडी - चौमू (जयपुर ग्रामीण)***

- इसका रचयिता कान्हा व्यास है। जबकि डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार इसका रचयिता महेश भट्ट है।

जगन्नाथराय प्रशस्ति (1652) :-

- यह जगदीश मंदिर, उदयपुर में उत्कीर्ण है।
- इसमें बापा से साँगा तक की उपलब्धियों का वर्णन है।
- यह मंदिर जगतसिंह प्रथम द्वारा बनाया गया।
- यह पंचायतन शैली का लेख है। जिसे अर्जुन की निगरानी में तथा सूत्राकार भाणा व उसके पुत्रा मुकुन्द की अध्यक्षता में बनवाया गया।

राजप्रशस्ति (1676) :-

- यह प्रशस्ति राजसंमद झील के तट पर नौ चौकी स्थान के ताकों में 25 काली पाषाण शिलाओं पर पद्य संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है, यह विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति अभलेख है।
- इसका रचयिता तैलंग ब्राह्मण रणछोड़ भट्ट था।
- मेवाड़ के शासकों की उपलब्धियों का वर्णन मिलता है।
- यह प्रशस्ति जगतसिंह प्रथम तथा राजसिंह के काल की उपलब्धियां जानने के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत है, यह विश्व की सबसे बड़ी पाषाण उत्कीर्ण प्रशस्ति है।

राठौड़ वंश की शाखाएँ –

धांधल, भडेल, धूहड़िया, हटडिया, मालावत, गोगादेव, महेचा, राठौड़, बीका, मेडतिया, बीदावत, बाल चांपावत, कांधलोत, उदावत, देवराजोत, गहड़वाल, करमसोत, कुम्पावत, मंडलावत, नरावत आदि।

मारवाड़ का इतिहास

राठौड़ वंश

राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है। उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता है। मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था। प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये। फिर राठौड़ वंश की स्थापना इस भाग में हुई,

शाखा	स्थापना	संस्थापक
1. मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
2. बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
किशनगढ़	1609 ई.-	किशनसिंह

उत्पत्ति

- राठौड़ शब्द की उत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती है।
- पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं।
- "राठौड़ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है।
- डॉ. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है। इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया है।
- डॉ. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना है।

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

- राव सीहा जी राजस्थान में स्वतंत्र राठौड़ राज्य के संस्थापक थे। राव सीहा जी के वीर वंशज अपने शौर्य, वीरता एवं पराक्रम व तलवार के धनी रहे हैं। इनके वंशजों में दुर्गादास व अमर सिंह जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। राव सिहा सेतराम जी के आठ पुत्रों में सबसे बड़े थे।

चेतराम सम्राट के, पुत्र अस्ट महावीर !
जिसमें सिहों जेस्ठ सूत, महारथी रणधीर।

- राव सीहा जी सं. 1268 के लगभग पुष्कर की तीर्थ यात्रा के समय मारवाड़ आये थे उस मारवाड़ की जनता मीणों, मेरों आदि की लूटपाट से पीड़ित थी, राव सिहा के आगमन की सूचना पर पाली नगर के पालीवाल ब्राह्मण अपने मुखिया जसोधर के साथ सीहा जी मिलकर पाली नगर को लूटपाट व अत्याचारों से मुक्त करने की प्रार्थना की। अपनी तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद राव सीहा जी ने भाइयों व फलौदी के जगमाल की सहायता से पाली में हो रहे अत्याचारों पर काबू पा लिया एवं वहां शांति व शासन व्यवस्था कायम की, जिससे पाली नगर की व्यापारिक उन्नति होने लगी।

आठों में सीहा बड़ा, देव गरुड़ है साथ।
बनकर छोडिया कन्नोज में, पाली मारा हाथ।
पाली के अलावा भीनमाल के शासक के अत्याचारों की जनता की शिकायत पर जनता को अत्याचारों से मुक्त कराया।
भीनमाल लिधी भडे,सिहे साल बजाय।
दत दीन्हो सत सग्रहियो, ओजस कठे न जाय।

- पाली व भीनमाल में राठौड़ राज्य स्थापित करने के बाद सीहा जी ने खेड़ पर आक्रमण कर विजय कर लिया।

महत्वपूर्ण तथ्य -

- मारवाड़ के राठौड़ वंश का संस्थापक / राठौड़ वंश का आदि पुरुष कहा जाता है।
- राव सीहां कुंवर 'सेतराम' का पुत्र था उसकी रानी सोलंकी वंश की 'पार्वती थी।
- 13 वीं शताब्दी में जब तुर्कों ने कन्नौज को आक्रमण कर बर्बाद कर दिया तो राव सीहा मारवाड़ चला आया।
- पाली के समीप बीठू गाँव के देवल के लेख से सीहा की मृत्यु की तिथि 1273 ई. निश्चित होती है। इस लेख के अनुसार सीहा की मृत्यु बीठू गाँव (पाली) में मुसलमानों से गायों कि रक्षा करते हुए युद्ध के दौरान हुई थी। इस

लेख पर अश्वारोही सीहा को शत्रु पर भाला मारते हुए दिखाया गया है ।

- राव सीहा के पश्चात् उनका पुत्र आसनाथ गद्दी पर बैठा।

आसनाथ (1273 – 1291 ई.)

- सीहा के बाद आसनाथ राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोच को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आसनाथ 1291 ई. में वीरगति को प्राप्त हुआ ।
- आसनाथ के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी नागणेचीद्ध की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई ।
- इनके छोटे भाई का नाम धांधलश् था। ये लोक देवता पाबू जी के पिता थे।

राव चूँड़ा (1383 – 1423)

- राव चूँड़ा विरमदेव का पुत्र था ।
- राव चूँड़ा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता है । अपने पिता की मृत्यु के समय चूँड़ा छः वर्ष का था । इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूँड़ा को सालोड़ी गाँव जागीर में दी थी ।
- उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डौर ए जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज में उसे मण्डौर दुर्ग मिला ।
- चूँड़ा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।
- इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूँड़ा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।
- उसने जलाल खाँ खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था ।
- परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगल प्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूँड़ा मारा गया ।
- उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँद बावड़ी का निर्माण करवाया था ।

रावल मल्लिनाथ

राजस्थान के प्रसिद्ध लोक देवता हैं इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (जाकोड़ा) बनायी। मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं ।

- भाई 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।)

कान्हा (1423 – 1427)

चूँड़ा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था।

- 1427 ई. में रणमल ने राणा मोकल की सहायता से मण्डौर पर अधिकार कर लिया। इस समय कान्हा का उत्तराधिकारी सत्ता मण्डौर का शासक था।
- ऐसा कहा जाता है कि राव कान्हा की मृत्यु 'करणी माता के हाथों हुई थी ।

राव रणमल, - (1427 – 1438)

राव रणमल, राव चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था जो उन्हें रानी चाँद कँवर से हुआ था ।

- परन्तु जब उसे राजा नहीं बनाया गया तो वह नाराज होकर मेवाड़ के राणा लक्ष सिंह (लाखा) की शरण में चला गया ।
- राणा लाखा ने रणमल को 'धणला' की जागीर प्रदान की।
- रणमल ने अपनी बहन हंसाबाई का विवाह राणा लाखा से कर दिया । परन्तु उसने एक शर्त रखी जिसके अनुसार हंसाबाई का पुत्र ही मेवाड़ का शासक बने ।
- मेवाड़ी सरदारों ने 1438 ई. में उसकी प्रेयसी भारमली की सहायता से चित्तौड़ में रणमल की हत्या कर दी । ऐसा कहा जाता है कि उसे उसकी प्रेयसी भारमली ने शराब में विष दिया था । इस तरह रणमल का अंत हुआ।

राव जोधा (1438 – 1489)

1. राव 'रणमल' को रानी 'कोडमद' से जो पुत्र हुआ वही राव जोधा था ।

मेहरानगढ़ दुर्ग

1. ज्ञात स्त्रोतों से यह विदित होता है कि मेहरानगढ़ की नींव का पहला पत्थर करणी माता (रिद्धि बाई) ने रखा था ।
2. इसकी नींव में राजा राम खड़ेला नामक व्यक्ति को जिंदा चुनवाया गया था ।
3. किपलिंग ने मेहरानगढ़ दुर्ग के लिए कहा कि – इस दुर्ग निर्माण शायद परियों व फरिश्तों ने किया था' ।
4. इसमें चामुण्डा माता का मंदिर, मानप्रकाश पुस्तकालय, फूलमहल , कीरत व धन्ना की छतरी इत्यादि के दर्शन होते हैं, तथा किलकिला, शम्भू बाण व गजनी खां, जो कि तोपों के नाम हैं, भी यहाँ देखने को मिलती है ।

राव सातल (1489 – 1492)

1. जोधा के पुत्र राव सातल ने सातलमेर कस्बा बसाया था। उसकी भटियाणी रानी फूलां में जोधपुर में कुलेलाव तालाब बनवाया ।
2. अजमेर के हाकिम मल्लू खाँ के साथ पीपाड़ (जोधपुर) के युद्ध में घायल हो जाने के कारण राव सातल की मृत्यु (1492 ई.) हो गई । इस युद्ध में राव सातल विजयी रहा था ।

राव सूजा 1492 – 1515

- यह राव जोधा का दूसरा पुत्र था । इसके समय बीकानेर के राव बीका ने जोधपुर पर आक्रमण किया था ।

- अतः इस सिफारिश के आधार पर 1 मई 1949 को मत्स्य संघ को वृहद् राजस्थान में मिलाकर वृहत्तर राजस्थान का निर्माण किया गया । इसका उद्घाटन 15 मई 1949 को हुआ ।

सिरोही

- 1947 को सिरोही गुजरात में मिला दिया गया। गोकुल भाई भट्ट एवं बलवंत सिंह मेहता ने इसका विरोध किया।
- पटेल ने गोकुल भाई भट्ट के गाँव हाथल के अलावा पूरे सिरोही को गुजरात में विलय कर लिया और उस नेहरू को कहा कि, राजस्थानी नेताओं को गोकुल भाई भट्ट चाहिए जो मिल जायेगा ।
- लेकिन भारी विरोध के पश्चात् अन्ततः 26 जनवरी 1950 को सिरोही को वृहद् राजस्थान में मिला दिया गया ।
- आबू देलवाड़ा के संदर्भ में हीरालाल शास्त्री ने कहा था कि गोकुल भाई भट्ट के बिना राजस्थान निर्माण की कल्पना भी नहीं की जा सकती ।

सप्तम चरण

- 1 नवम्बर, 1956 समय 9 : 40 : 27 अजमेर, मेरवाड़ आबू सुनेल टप्पा मंदसौर से लेकर राजस्थान में मिलाया गया तथा बदले में सिरोंज गांव मध्यप्रदेश को दिया गया।
- अजमेर मेरवाड़ केन्द्रशासित प्रदेश था जहां अलग से विधानसभा चलती थी इसे धारा सभा के नाम से जाना जाता था ।
- इसके मुख्यमंत्री हरिभाऊ उपाध्याय थे जिन्होंने अजमेर मेरवाड़ के विलय का विरोध किया था ।
- सातवें संविधान संशोधन के वृहद् राज्यप्रमुख, उप राज्यप्रमुख, महाराजा प्रमुख पदों की समाप्ति और राज्यपाल का पद सृजित किया गया ।
- सिरोही रियासत का विलय दो चरणों में हुआ था ।
- राजस्थान के एकीकरण का खलनायक कोनार्ड कोर फील्ड था ।

कला एवं संस्कृति

अध्याय – 1

राजस्थान की स्थापत्य कला, किले स्मारक महल इत्यादि

किले :-

गागरौन का किला :

- वर्तमान झालावाड़ जिले में काली सिंध एवं आहू नदियों के किनारे स्थित है।
- गागरोण का किला एक जलदुर्ग है।
- इसका निर्माण डोड परमार शासकों ने करवाया था, इसलिए इसे ' डोडगढ़ ' एवं 'धूलरगढ़' भी कहते हैं ।
- देवेन सिंह खिंची ने बीजलदेव डोड को हराकर इस पर अधिकार कर लिया था।

वैत्रसिंह :

- 1303 में वैत्रसिंह के समय अलाउद्दीन ने आक्रमण किया था।
- संत हमीदुद्दीन चिश्ती वैत्रसिंह के समय गागरौन आए थे, जिन्हें हम 'मीठे साहेब' के नाम से जानते हैं । इनकी दरगाह गागरौन के किले में बनी हुई है।

प्रताप सिंह :

- इन्हें हम संत पीपा के नाम से जानते हैं। इनके समय में फिरोज तुगलक ने गागरोण पर विफल आक्रमण किया था। संत पीपा की छत्तरी गागरौन में बनी हुई है।

अचलदास :

- 1423 ई. में मालवा का सुल्तान होशंगशाह गागरौन पर आक्रमण करता है। इस समय गागरौण के किले का पहला साका होता है।
- अचलदास खिंची अपने साथियों के साथ लड़ता हुआ मारा जाता है।
- लाला मेवाड़ी के नेतृत्व में जौहर किया जाता है।
- अचलदास खिंची की अन्य रानी का नाम : उमा सांखला (जांगलू)।
- शिवदास गाड़ण ने 'अचलदास खिंचीरी वचनिका' नामक ग्रंथ लिखा है।

पाल्हण सिंह (अचलदास का पुत्र, कुम्भा का भांजा) :

- 1444 ई. में मालवा का सुल्तान महमूद खिलजी गागरौन पर आक्रमण करता है।
- कुम्भा अपने सेनानायक धीरज देव को भेजकर पाल्हण सिंह की सहायता करता है। इस समय गागरौण के किले का दुसरा साका होता है। महमूद खिलजी ने गागरौण का नाम मुस्तफाबाद रख दिया था। (महासिरे मुहम्मदशाही में इसका जिक्र है)।
- बाद में गागरौन का किला महाराणा सांगा (मेवाड़) के अधिकार में आ गया था।
- सांगा ने अपने मित्र मेदिनी राय (चन्देरी) को यह किला दे दिया।

- 1567-68 ई. के चित्तौड़ आक्रमण के समय अकबर इसके किले में ठहरता है और फैजी इससे मुलाकात करता है।
- बाद में अकबर ने यह किला पृथ्वीराज राठौड़ को दे दिया। पृथ्वीराज राठौड़ ने इसी किले में 'बेलिक्रिसण रुक्मिणी' की रचना की।
- शाहजहाँ ने यह किला कोटा महाराजा माधोसिंह को दे दिया था। कोटा महाराजा दुर्जनसाल ने यहाँ मधुसूदन का मंदिर बनाया।
- जालिमसिंह झाला ने यहाँ जालिम कोट (परकोटा) का निर्माण करवाया।
- औरंगजेब ने यहा बुलन्द दरवाजे का निर्माण करवाया।
- इस किले में एक जौहर कुण्ड है, अंधेरी बावड़ी, गीध कढ़ाई (यहाँ राजनैतिक ऊंची पहाड़ी पर बंदियों को सजा दी जाती थी) है।
- गागरौन का किला बिना नींव के (चट्टानों पर) खड़ा है। कोटा राज्य की टकसाल यहीं पर थी।

चितौड़गढ़ का किला :

- दुर्गों का सिरमौर
- दुर्गों का तीर्थस्थल
- राजस्थान का गौरव
- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)।
- 734 ई. में बप्पा रावल ने मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 ई. में उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- चित्तौड़ के किले में तीन साके हुए : 1303 में द्वारा रतनसिंह के समय : अलाउद्दीन। 1534 में द्वारा कर्मावती के समय : बहादुरशाह। 1568 में उदयसिंह के समय : अकबर।
- कुम्भा ने कुम्भा स्वामी का मंदिर, श्रृंगार चंवरी का मंदिर बनवाया।
- मोकल ने समिद्धेश्वर मंदिर का पुनर्निमाण करवाया।
- बनवीर ने नवलखा भण्डार बनवाया।
- बनवीर ने तुलजा भवानी का मंदिर बनवाया।
- चित्तौड़ के किले में रत्नेश्वर तालाब, भीमलव तालाब, मीरा मंदिर, कालिका मंदिर, लाखोटा बारी आदि प्रमुख है।
- चित्तौड़ का किला मेसा पठार पर मीनाकृति में बना हुआ है। धान्वन दुर्ग को छोड़कर इसमें अन्य सभी विशेषताएँ है।
- यह किला गम्भीरी एवं बेड़च नदियों के किनारे बसा हुआ है।
- महाराणा कुम्भा ने इसमें 7 दरवाजे बनवाए।
- कुम्भा ने इसमें 'विजय स्तम्भ' (कीर्ति स्तम्भ) का निर्माण करवाया।
- चित्तौड़ के किले में एक जैन कीर्ति स्तम्भ बना हुआ है।
- यह राजस्थान की प्रथम इमारत है जिस पर 15 अगस्त 1949 को एक रुपये का डाक टिकट जारी किया गया।

कुम्भलगढ़ का किला :

- महाराणा कुम्भा ने 1448 ई. से 1458 ई. के बीच इसका निर्माण करवाया।
- कुम्भलगढ़ का वास्तुकार 'मण्डन' था।
- कुम्भलगढ़ वर्तमान राजसमंद जिले में स्थित है।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़-मारवाड़ का सीमा प्रहरी कहते है।
- अत्यधिक ऊंचाई पर बना हुआ होने के करण अबुल फजल ने कहा था कि इस किले को नीचे से ऊपर की ओर देखने पर पगड़ी गिर जाती है।
- कुम्भलगढ़ के शीर्ष भाग में कटारगढ़ बना हुआ है जो कुम्भा का निजी आवास था। कटारगढ़ को 'मेवाड़ की आँख' कहते है।
- कुम्भलगढ़ के किले में उदय ने कुम्भा की हत्या (मामादेव कुण्ड के पास) की थी।
- उड़वा राजकुमार पृथ्वीराज की छत्तरी बनी हुई है। (12 खम्भों की)।
- पन्नाधाय उदयसिंह को लेकर कुम्भलढ़ के किले में आयी थी, उदयसिंह का राजतिलक यहीं हुआ था।
- महाराणा प्रताप ने भी अपना शुरुआती शासन कुम्भलगढ़ से चलाया था।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़ शासकों की 'संकटकालीन राजधानी' कहते है।
- कुम्भलगढ़ के किले में भी कुम्भा स्वामी का मंदिर बना हुआ है।
- इसी किले में झाली रानी का महल बना हुआ है।
- कुम्भलगढ़ के दीवार की लम्बाई : 36 कि.मी. और चौड़ाई इतनी है कि आठ घोड़े समानान्तर दौड़ सकते है।
- कर्नल जेम्स टॉड ने इसकी तुलना 'यूरोप के एट्रस्कन' (सुदृढ़ प्राचीर, बुर्ज एवं कंगरो के कारण) से की।

रणथम्भौर दुर्ग :

- वर्तमान में सवाई माधोपुर में स्थित है।
- 8वीं शताब्दी में चौहान शासकों द्वारा निर्मित।
- अण्डाकार आकृति में निर्मित है।
- गिरि एवं वन दोनों दुर्गों की विशेषता रखता है।
- अबुल फजल : बाकी सब किले नंगे है पर रणथम्भौर दुर्ग बख्तरबंद है।
- हम्मीर के समय जलालुद्दीन खिलजी ने यहाँ एक विफल आक्रमण किया था।
- इस विफलता के बाद खिलजी ने कहा था : ऐसे 10 किलों को मैं मुसलमान के एक बाल के बराबर भी नहीं समझता।
- 1301 ई. : अलाउद्दीन ने रणथम्भौर किले पर आक्रमण किया। उस समय रणथम्भौर का पहला साका हम्मीर के नेतृत्व में हुआ।

अध्याय – 8

लोक देवता एंव लोक देवियाँ

राजस्थान के लोक देवता

(1) गोगाजी चौहान

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता गोगाजी राठौर का वर्णन- पंच पीरों में सर्वाधिक प्रमुख स्थान।

जन्म - संवत् 1003 में, जन्म स्थान - ददरेवा (चूरू)।

पिता - जेवरजी चौहान, माता - बाछल दे, पत्नी - कोलुमण्ड (फलौदी) की राजकुमारी केलमदे (मेनलदे)।

- केलमदे की मृत्यु साँप के कांटने से हुई जिससे क्रोधित होकर गोगाजी ने अग्नि अनुष्ठान किया। जिसमें कई. साँप जलकर भस्म हो गये फिर साँपों के मुखिया ने आकर उनके अनुष्ठान को रोककर केलमदे को जीवित करते हैं। तभी से गोगाजी नागों के देवता के रूप में पूजे जाते हैं।
- गोगाजी का अपने मौसेरे भाई.यों अर्जन व सुर्जन के साथ जमीन जायदाद को लेकर झगड़ा था। अर्जन - सुर्जन ने मुस्लिम आक्रान्ताओं (महमूद गजनवी) की मदद से गोगाजी पर आक्रमण कर दिया। गोगाजी वीरतापूर्वक लड़कर शहीद हुए।
- युद्ध करते समय गोगाजी का सिर ददरेवा (चूरू) में गिरा इसलिए इसे शीर्षमेडी (शीषमेडी) तथा धड़ नोहर (हनुमानगढ़) में गिरा इसलिए इसे धड़मेड़ी / धुरमेड़ी / गोगामेड़ी भी कहते हैं।
- बिना सिर के ही गोगाजी को युद्ध करते हुए देखकर महमूद गजनवी ने गोगाजी को जाहिर पीर (प्रत्यक्ष पीर) कहा।
- उत्तर प्रदेश में गोगाजी को जहर उतारने के कारण जहर पीर / जाहर पीर भी कहते हैं।
- गोगामेड़ी का निर्माण फिरोजशाह तुगलक ने करवाया। गोगामेड़ी के मुख्य द्वार पर बिस्मिल्लाह लिखा है तथा इसकी आकृति मकबरेनुमा है। गोगामेड़ी का वर्तमान स्वरूप बीकानेर के महाराजा गंगासिंह की देन है। प्रतिवर्ष गोगानवमी (भाद्रपद कृष्णा नवमी) को गोगाजी की याद में गोगामेड़ी, हनुमानगढ़ में भव्य मेला भरता है।
- गोगाजी की आराधना में श्रद्धालु सांकल नृत्य करते हैं।
- गोगामेड़ी में एक हिन्दू व एक मुस्लिम पुजारी है।
- प्रतीक चिह्न - सर्प।
- खेजड़ी के वृक्ष के नीचे गोगाजी का निवास स्थान माना जाता है।
- गोगाजी की ध्वजा सबसे बड़ी ध्वजा मानी जाती है।
- 'गोगाजी की ओल्डी' नाम से प्रसिद्ध गोगाजी का अन्य पूजा स्थल - साँचौर ।
- गोगाजी से सम्बन्धित वाद्य यंत्र - डेरू।
- किसान वर्षा के बाद खेत जोतने से पहले हल व बैल को गोगाजी के नाम की राखी गोगा राखड़ी बांधते हैं।
- सवारी - नीली घोड़ी।
- गोगा बाप्पा नाम से भी प्रसिद्ध है।

(2) पाबूजी राठौड़ -

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता पाबूजी राठौर का वर्णन-

जन्म - 1239 ई.में, जन्म स्थान - कोलुमण्ड गाँव (फलौदी)

पिता - धाँधल जी राठौड़, माता - कमलादे

पत्नी – फूलमदे सुपियार दे सोढ़ी।

- फूलमदे अमरकोट के राजा सूरजमल सोढ़ा की पुत्री थी।
- पाबूजी की घोड़ी- केसर कालमी (यह काले रंग की घोड़ी उन्हें देवल चारणी ने दी, जो जायल, नागौर के काछेला चारण की पत्नी थी)।
- सन् 1276 ई.में जोधपुर के देचू गाँव में देवलचारणी की गायों को जींदराव खींची से छुड़ाते हुए पाबूजी वीर गति को प्राप्त हुए, पाबूजी की पत्नी उनके वस्त्रों के साथ सती हुई। इस युद्ध में पाबूजी के भाई. बूड़ोजी भी शहीद हुए।
- पाबूजी के भतीजे व बूड़ोजी के पुत्र रूपनाथ जी ने जींदराव खींची को मारकर अपने पिता व चाचा की मृत्यु का बदला लिया। रूपनाथ जी को भी लोकदेवता के रूप में पूजते हैं। राजस्थान में रूपनाथ जी के प्रमुख मंदिर कोलुमण्ड (फलौदी) तथा सिम्भूदड़ा (नोखा मण्डी, बीकानेर) में है। हिमाचल प्रदेश में रूपनाथ जी को बालकनाथ नाम से भी जाना जाता है।
- पाबूजी की फड़ नायक जाति के भील भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- फड़/पड़ - किसी भी महत्पूर्ण घटना या महापुरुष की जीवनी का कपड़े पर चित्रात्मक अंकन ही फड़/पड़ कहलाता है। फड़ का वाचन केवल रात्रि में होता है। फड़-वाचन के समय भोपा वाद्य यंत्र के साथ फड़ बाँचता है तथा भोपी संबंधित प्रसंग वाले चित्र को लालटेन की सहायता से दर्शकों को दिखाती है तथा साथ में नृत्य भी करती रहती है।
- राजस्थान में फड़ निर्माण का प्रमुख केन्द्र शाहपुरा है। वहाँ का जोशी परिवार फड़ चित्रकारी में सिद्धहस्त है। शांतिलाल जोशी व श्रीलाल जोशी प्रसिद्ध फड़ चित्रकार हुए हैं। यह जोशी परिवार वर्तमान में 'द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका' तथा 'कलिंग विजय के बाद अशोक' विषय पर फड़ बना रहा है।
- सर्वाधिक फड़ें तथा सर्वाधिक लोकप्रिय / प्रसिद्ध फड़ पाबूजी की फड़ है।
- रामदेवजी की फड़ कामड़ जाति के भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- सबसे प्राचीन फड़, सबसे लम्बी फड़ तथा सर्वाधिक प्रसंगों वाली फड़ देवनारायण जी की फड़ है।
- भारत सरकार ने राजस्थान की जिस फड़ पर सर्वप्रथम डाक टिकट जारी किया वह देवनारायण जी की फड़ (2 सितम्बर, 1992 को 5 रु. का डाक टिकट) है।

- देवनारायण जी की फड़ गुर्जर जाति के कुँआरे भोपे जंतर वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- भैंसासुर की फड़ का वाचन नहीं होता, इसकी केवल पूजा (कंजर जाति के द्वारा) होती है।
- रामदला-कृष्णदला की फड़ (पूर्वी राजस्थान में) एकमात्र ऐसी फड़ है जिसका वाचन दिन में होता है।
- शाहपुरा के जोशी परिवार द्वारा बनाई. गई. अमिताभ बच्चन की फड़ को बाँचकर मारवाड़ का भोपा रामलाल व भोपी पताशी प्रसिद्ध हुए।
- मारवाड़ में साण्डे (ऊँटनी) लाने का श्रेय पाबूजी को जाता है।
- पाबूजी 'ऊँटों के देवता', 'गौरक्षक देवता' तथा 'प्लेग रक्षक देवता' के रूप में प्रसिद्ध है।
- पाबूजी को 'लक्ष्मण का अवतार' माना जाता है।
- ऊंटों की पालक जाति राईका / रेबारी / देवासी के आराध्य देव पाबूजी हैं।
- पाबूजी की जीवनी 'पाबू प्रकाश' के रचयिता- आशिया मोड़जी।
- हरमल व चाँदा डेमा पाबूजी के रक्षक थे।
- माघ शुक्ला दशमी तथा भाद्रपद शुक्ला दशमी को कोलुमण्ड गाँव (फलौदी) में पाबूजी का प्रसिद्ध मेला भरता है।
- पाबूजी के पवाड़ेध्यावड़े (गाथा गीत) प्रसिद्ध है, जो माठ वाद्य यंत्र के साथ गाये जाते हैं।
- प्रतीक चिह्न - भाला लिए हुए अश्वारोही तथा बायीं ओर झुकी हुईपाग।

(3) हड़बूजी

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता हड़बूजी का वर्णन-

- मारवाड़ के पंचपीरों में से एक हड़बूजी के पिता का नाम- मेहाजी सांखला (भुंडेल, नागौर)।
- हड़बूजी बाबा रामदेवजी के मौसेरे भाई. थे।
- गुरु - बालीनाथ।
- संकटकाल में हड़बूजी ने जोधपुर के राजा राव जोधा को तलवार भेंट की और राव जोधा ने इन्हें बैंगटी (फलौदी) की जागीर प्रदान की।
- बैंगटी में इनका प्रमुख पूजा स्थल है। यहाँ हड़बूजी की गाड़ी (छकड़ाध् ऊँट गाड़ी) की पूजा होती हैं। इस गाड़ी में हड़बूजी विकलांग गायों के लिए दूर-दूर से घास भरकर लाते थे।
- हड़बूजी शकुन शास्त्र के ज्ञाता थे।
- हड़बूजी की सवारी सियार मानी जाती है।

(4) रामदेवजी -

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता रामदेवजी का वर्णन-

- रामसापीर, रूणेचा रा धणी व पीरां रा पीर नाम से प्रसिद्ध।
- रामदेव जी को कृष्ण का तथा उनके बड़े भाई. बीरमदेव को बलराम का अवतार माना जाता है।
- पिता का नाम-अजमलजी तंवर, माता-मैणादे, पत्नी- नेतलदे (नेतलदे अमरकोट के राजा दल्लेसिंह सोढ़ा की पुत्री थी।)
- लोकमान्यता के अनुसार रामदेवजी का जन्म उंडूकाश्मीर गाँव (शिव-तहसील, बाड़मेर) में भाद्रपद शुक्ला द्वितीया को हुआ।
- समाधि-रूणेचा (जैसलमेर) में रामसरोवर की पाल पर भाद्रपद शुक्ला दशमी को ली।
- रामदेवजी के लिए नियत समाधि स्थल पर उनकी मुँह बोली बहिन डाली बाई. ने पहले समाधि ली।
- रामदेवजी की सगी बहिनें - लाछा बाई., सुगना बाई.।
- रामसापीर उपनाम से प्रसिद्ध बाबा रामदेवजी ने अपने जीवन काल में कई. परचे (चमत्कार) दिखाये। उन्होनें मक्का से पधारे पंचपीरों को भोजन कराते समय उनका कटोरा प्रस्तुत कर उन्हें चमत्कार दिखाया जिससे मक्का के उन पीरों ने कहा कि हम तो केवल पीर हैं, पर आप तो पीरों के पीर हैं।
- प्रमुख शिष्य-हरजी भाटी, आई माता।
- गुरु का नाम-बालीनाथ। बालीनाथजी का मन्दिर- मसूरिया, जोधपुर ग्रामीण में।
- सातलमेर (पोकरण) में भैरव राक्षस का वध रामदेवजी ने किया।
- नेजा - रामदेवजी की पचरंगी ध्वजा।
- जातरू - रामदेवजी के तीर्थ यात्री।
- रिखियां - रामदेवजी के मेघवाल भक्त।
- जम्मा - रामदेवजी की आराधना में श्रद्धालु लोग रिखियों से जम्मा जागरण (रात्रि कालीन सत्संग) दिलवाते हैं।
- कुष्ठ रोग निवारक देवता।
- हैजा रोग के निवारक देवता।
- सवारी - लीला (हरा) घोड़ा।
- कामड़ पंथ का प्रारम्भ किया।
- राजस्थान में कामड़ पंथियों का प्रमुख केन्द्र पादरला गाँव (पाली) इसके अलावा पोकरण (जैसलमेर) व डीडवाना (डीडवाना-कुचामन) में भी कामड़ पंथी निवास करते हैं।
- तेरहताली नृत्य- रामदेवजी की आराधना में कामड़ जाति की महिलाएं मंजीरे वाद्य यंत्र का प्रयोग करके प्रसिद्ध तेरहताली नृत्य करती हैं।
- यह बैठकर किया जाने वाला एकमात्र लोकनृत्य है।
- तेरहताली नृत्य के समय कामड़ जाति का पुरुष तन्दुरा (चौताराद्ध वाद्य यंत्र बजाता है। इस नृत्य को करते समय नृत्यांगना तेरह मंजीरे (जों दाहिने पांव पर, दो कोहनी पर तथा दो हाथ में) के साथ तेरह ताल उत्पन्न करते हुए तेरह स्थितियों में नृत्य करती हैं।
- यह एक व्यावसायिक / पेशेवर नृत्य है।
- प्रसिद्ध तेरहताली नृत्यांगनाएँ - मांगीबाई, दुर्गाबाई।
- रामदेवजी की फड़ कामड़ जाति के भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।

- मामादेव का कोईमंदिर नहीं होता न ही कोईमूर्ति होती है।
- गाँव के बाहर लकड़ी के तोरण के रूप में मामादेव पूजे जाते हैं ।
- इन्हें प्रसन्न करने के लिए "भैंस की कुर्बानी" दी जाती है। इनका प्रमुख मन्दिर स्यालोदड़ा (सीकर) में स्थित हैं । जहाँ प्रतिवर्ष रामनवमी को मेला भरता है।

लोक देवियाँ

लोक देवियाँ

राजस्थान के प्रमुख लोक देविया और देवता निम्नलिखित हैं -

करणी माता

- बीकानेर के राठौड़ शासकों की कुलदेवी। 'चूहों वाली देवी' के नाम से विख्यात। जन्म सुआप गाँव (फलौदी) के चारण परिवार में।
- मंदिर - देशनोक (बीकानेर)।

करणी जी के काबे

- इनके मंदिर के चूहे । यहाँ सफेद चूहे के दर्शन करण जी के दर्शन माने जाते हैं।
- राव जोधा के समय मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता ने रखी।
- करणी माता की गायों का ग्वाला-दशरथ मेघवाल
- राव कान्ह ने इनकी गायों पर हमला किया ।
- महाराजा गंगासिंह ने इस मन्दिर में चांदी के किवाड़ भेंट किया ।
- इनके बचपन का नाम रिद्धुबाई. था।
- मठ – देवी के मन्दिर को मठ कहते हैं ।
- अवतार - जगतमाता
- उपनाम – काबा वाली माता, चूहों की देवी ।
- करणी जी की इष्ट देवी 'तेमड़ाजी' हैं । करणी जी के मंदिर के पास तेमड़ाराय देवी का भी मंदिर हैं ।करणी देवी का एकरूप 'सफेदचील' भी हैं ।
- 'नेहड़ी' नामक दर्शनीय स्थल हैं जो करणी माता के मंदिर से कुछ दूर स्थित हैं ।
- करणी जी के मठ के पुजारी चारण जाति के होते हैं।
- करणी जी के आशीर्वाद एवं कृपा से ही राठौड़ शासक 'रावबीका' नेबी का ने रमें राठौड़ वंश की स्थापना की थी । चौत्र एवं आश्विन माहकी नवरात्रि में मेला भरता है।

जीण माता

- चौहान वंश की आराध्य देवी । ये धंधराय की पुत्री एवं हर्ष की बहन थी। मंदिर में इनकी अष्टभुजी प्रतिमा है। मंदिर का निर्माण रैवासा (सीकर) में पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय राजा हट्टड़ द्वारा।
- जीणमाता की अष्टभुजा प्रतिमा एक बार में ढाई प्याला मदिरा पान करती हैं । इसे प्रतिदिन ढाई प्याला शराब पिलाई जाती है ।
- जीणमाता का मेला प्रतिवर्ष चौत्र और आश्विन माह के नवरात्रों में लगता है।
- जीणमाता तांत्रिक शक्तिपीठ हैं । इसकी अष्टभुजी प्रतिमा के सामने घी एवं तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित रहतीहैं ।
- जीणमाता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा हैं । यह गीत कनफटे जोगियों द्वारा डमरू एवं सारंगी वाद्य की संगत में गाया जाता है।
- जीणमाता का अन्य नाम भ्रामरी देवी है ।

कैला देवी -

- करौली के यदुवंश (यादववंश) की कुल देवी । इनकी आराधना में लागुरिया गीत गाये जाते हैं ।
- **मंदिर** :- त्रिकूट पर्वत की घाटी (करौली) में। यहाँ नवरात्रा में विशाल लक्खी मेला भरता है।
- कैलादेवी का लक्खी मेला प्रतिवर्ष चौत्र मास की शुक्ला अष्टमी को भरता हैं । कैलादेवी मंदिर के सामने बोहरा की छतरी है ।

शिला देवी - जयपुर के कछवाहा वंश की आराध्यदेवी / कुलदेवी । इनका मंदिर आमेर दुर्ग में है ।

अन्नपूर्णा -

- शिलामाता की यह मूर्तिपाल शैली में काले संगमरमर में निर्मित हैं । महाराजा मानसिंह पं. बंगाल के राजा के दार से सन् 1604 में मूर्ति लाए थे।
- इस देवी को नरबलि दी जाती थी तथा यहाँ भक्तों की मांग के अनुसार मन्दिर का चरणामृत दिया जाता हैं । मान्यता है कि इस देवी की जहाँ पूजा होती है उसे कोई नहीं जीत सका।

जमुवायमाता- ढूँढाड़ के कछवाहा राजवंश की कुलदेवी। इनका मंदिर जमुवारामगढ़, जयपुर ग्रामीण में है। दुलहराय द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया।

आईजी माता -

- सिरवी जाति के क्षत्रियों की कुलदेवी । इनका मंदिर बिलाड़ा (जोधपुर ग्रामीण) में है। मंदिर 'दरगाह' व थान 'बड़ेर' कहा जाता है। ये रामदेवजी की शिष्या थी। इन्हें मानी देवी (नवदुर्गा) का अवतार माना जाता है।
- इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती तथा एक दीपक की लौ से के सरटपकती रहतीहैं ।इनके मन्दिर का पूजारी दीवान कहलाताहै ।

राणी सती -

- वास्तविक नाम 'नारायणी'। 'दादीजी' के नाम सेलोक प्रिय। झुंझुनूँ में राणी सती के मंदिर में हरवंश भाद्रपद अमावस्या को मेला भरता है ।

अध्याय – 9

राजस्थान के वस्त्र एवं आभूषण

राजस्थान में पुरुष वस्त्र (वेशभूषा)

पगड़ी- इसको पाग, पेचा, फालियो, साफा, घुमालो, फेटो, सेलो, अमलो, लपेटो, बागा, शिरोत्राण, फेंटा आदि नामो से भी जाना जाता है। यह सिर पर लपेटे जाना वाला लगभग 5.5 मीटर लम्बी एवं 40 सेमी. चौड़ी होती है। उदयपुर की पगड़ी तथा जोधपुर का साफा प्रसिद्ध है। युद्ध भूमि में केसरिया पगड़ी, दशहरे पर काले रंग की मंदील पगड़ी, होली पर फूल-पत्तियों वाली पगड़ी, विवाह पर पंचरंगी पगड़ी, श्रावण में लहरिया पगड़ी पहनी जाती है। रक्षाबंधन के अवसर पर बहिन भाई को मोठड़ा साफा देती है। मीणा एवं गुर्जर जाति की पगड़ी को फेटा कहते है।

धोती- पुरुष द्वारा कमर से घुटने तक पहना जाने वाला वस्त्र है। आदिवासियों/भीलों द्वारा पहनी जाने वाली धोती ढ़ेपाड़ा/डेपाड़ा कहलाती है। सहरिया जनजाति के लोग धोती को पंछा कहते है।

अंगरखी / बुगतरी - पूरी बाहों का बिना कॉलर एवं बटन वाला कुर्ता जिसे बांधने के लिए कसें (डसें) होती है। यह प्रायः सफेद रंग का होता है जिस पर कढ़ाई की होती है।

पोतिया - भील पुरुषों द्वारा पगड़ी के स्थान पर बांधा जाने वाला वस्त्र पोतिया कहलाता है।

शेरवानी- शादियों में पुरुषों द्वारा पहने जाने वाला वस्त्र जो घुटने से लम्बा एवं कोटनुमा होता है।

पायजामा - अंगरखी, चुगा और जामें के नीचे कमर व पैरों में पहना जाने वाला वस्त्र पायजामा कहलाता है।

टोपी- यह पगड़ी की जगह सिर को ढकने का वस्त्र होता है।

कमीज- ग्रामीण क्षेत्र में पुरुषों द्वारा धोती (कमर) के ऊपर पहने जाने वाला वस्त्र।

चुगा - इसे चोगा भी कहते है। यह अंगरखी के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र होता है।

आतमसुख - तेज सर्दी से बचने के लिए शरीर पर ऊपर से नीचे तक पहने जाने वाला वस्त्र।

बिरजस (ब्रिजेस) - यह पायजामे के स्थान पर पहना जाने वाला चूड़ीदार वस्त्र होता है।

कमरबंध- इसे पटका भी कहते है। यह जामा के ऊपर कमर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र होता है, जिसे तलवार या कटार को फंसाया जाता है।

पछेवड़ा - तेज सर्दी में ठण्ड से बचाव के लिए पुरुषों द्वारा कम्बल की तरह ओढ़े जाने वाला मोटा सूती वस्त्र पछेवड़ा कहलाता है।

अंगोछा - धूप से बचने के लिए पुरुषों द्वारा सिर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र अंगोछा कहलाता है।

राजस्थान में महिलाओं (स्त्रियों) के वस्त्र / वेशभूषा

कुर्ती और कांचली – स्त्रियों द्वारा शरीर के ऊपरी हिस्से (कमर के ऊपर) पहनी जाती है। कांचली के ऊपर कुर्ती पहनी जाती है, जिसमें कांचली के बांहें होती है जबकि कुर्ती के बांहें नहीं होती है।

घाघरा - इसे लहंगा, पेटीकोट, घाबला आदि नामो से भी जाना जाता है। यह कमर से नीचे एड़ी तक पहना जाने वाला घेरदार वस्त्र होता है, जो कलियों को जोड़कर बनाया जाता है। आदिवासियों के घाघरे को कछाबू कहते है। आदिवासियों के नीले रंग के घाघरे को नांदना कहते है। रेशमी घाघरा जयपुर का प्रसिद्ध है।

ओढ़नी (लुंगड़ी) - महिलाओं द्वारा यह सिर पर ओढ़ी जाती है। लहरिया, पोमचा, धनक, चुंदरी, मोठड़ा आदि लोकप्रिय ओढ़नियां है। डूंगरशाही ओढ़नी जोधपुर की प्रसिद्ध है। ताराभांत की ओढ़नी आदिवासी महिलाओं द्वारा ओढ़ी जाती है।

लहरिया - यह श्रावण मास की तीज को पहने जाने वाली अनेक रंगों की ओढ़नी है। समुंद्री लहर नामक लहरिया जयपुर में रंगा जाता है।

मोठड़ा- जब लहरिया की धारियां एक-दूसरे को काटती हुई बनाई जाती है, तो वह मोठड़ा कहलाती है। मोठड़ा जोधपुर की प्रसिद्ध है।

सलवार- कमर से लेकर पांवों में पहना जाने वाला वस्त्र सलवार कहलाता है।

कुर्ता- यह शरीर के ऊपरी हिस्से पर पायजामा के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र होता है।

कटकी- अविवाहित व आदिवासी युवतियां द्वारा ओढ़ी जाने वाली ओढ़नी कटकी कहलाती है।

आदिवासी महिलाओं के वस्त्र

- ताराभांत की ओढ़नी
- केरी भांत की ओढ़नी
- सावली भांत की ओढ़नी
- लहर भांत की ओढ़नी
- ज्वार भेंट की ओढ़नी
- लूगड़ा
- रैजा - सहरिया स्त्री का विवाह वस्त्र
- चूनड़ - यह एक ओढ़नी होती है, इसमें बिंदियों का सयोंजन होता है।
- नौंदना - यह आदिवासी महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र होता है।
- रेनसाई - लहंगे की छींट जिसमें काले रंग पर लाल एवं भूरे रंग की बूटियां होती है।

अध्याय – 10

राजस्थान की चित्रकलाएँ एवं हस्तशिल्प

राजस्थानी चित्रकला की शैलियों का वर्गीकरण राजस्थानी चित्रशैली का सबसे पहला वैज्ञानिक विभाजन 1916 ई. मे श्री आनंद कुमार स्वामी ने अपनी पुस्तक 'राजपूत पेंटिग्स मे किया। राजस्थानी चित्रकला की शैलियों को भौगोलिक, सांस्कृतिक आधार पर चार प्रमुख स्कूलों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

मेवाड़ शैली

राजस्थानी चित्रकला का प्रारंभ जैन, अपभ्रंश, मालव आदि कलाओं के सामंजस्य से माना जाता है। राजस्थानी चित्रशैली की मूल शैली मेवाड़ चित्रशैली को माना जाता है। मेवाड़ स्कूल में चित्रकला को विकसित करने का श्रेय 'महाराणा कुंभा' को जाता है। मेवाड़ चित्र शैली का प्रथम चित्रित ग्रंथ 1260 ई. का 'श्रावक-प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि' को माना जाता है द्वितीय चित्रित ग्रन्थ' सुपासनाहचरित' है जिसमें स्वर्ण चूर्ण का प्रयोग किया गया। राजस्थानी चित्रकला के मेवाड़ स्कूल को विद्वानों द्वारा चार शैलियों में विभाजित किया गया है-

उदयपुर (मेवाड़) उपशैली

1. महाराणा जगत सिंह प्रथम इस समय केप्रशासक थे।
2. इस समय में प्रमुख चित्रित ग्रंथ महाराणा तेजसिंह के काल में रचित 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि एवं सुपासनाहचरित', गीत गोविंदआख्यायिका, 'रामायण शूकर' आदि।
3. इस समय के प्रमुख चित्रकारसाहिबदीन, मनोहर, कृपाराम, उमरा, गंगाराम, भैरोराम, शिवदत्त आदि।
4. इस समय प्रमुख रंगपीला एवं लाल रंग का उपयोग किया गया।
5. इस शैली में आकृति व वेशभूषा गठीला शरीर, लम्बी मूंछे, छोटा कद, विशालनयन, सिर पर पगड़ी, कमर में पटका, लंबा घेरदारजामा, कानां मे मोती होती थी।
6. इस शैली में नारी आकृति व वेशभूषा के चित्र मीनाकृत आँखे, गरूड़ सी लंबी नाक, ठिगना कद, लम्बी वेणी, लहंगा एवं पारदर्शक ओढ़नी से बनाये जाते थे।

विशेष तथ्य

- महाराणा अमरसिंह प्रथम के समय तो मेवाड़ शैली पर मुगल प्रभाव लगा।
- मेवाड़ शैली पर गुर्जर व जैन शैली का सर्वाधिक प्रभाव है।
- मेवाड़ चित्रशैली में बादल युक्त नीला आकाश, कदंब के वृक्ष, हाथी, कोयल, सारस एवं मछलियों का चित्रण अधिक मिलता है।
- महाराणा जगतसिंह प्रथम ने राजमहल में 'चितेरो की ओवरी' नाम से कला विद्यालय स्थापितकरवाया जिसे 'तस्वीरां रो कारखानों के नाम से जाना जाता है।

नाथद्वारा उपशैली

1. नाथद्वारा शैली के समय के शासक महाराणा राजसिंह थे।
2. इस शैली के प्रमुख चित्रित ग्रंथकृष्ण लीला, श्रीनाथ जी के विग्रह, ग्वाल-बाल, गोपियों आदि के चित्र प्रमुखतः मिलते हैं।
3. इस शैली के प्रमुख चित्रकार नारायण, चतुर्भुज, घासीराम, उदयराम, रेवा शंकर एवं कमला तथा इलायची (महिला चित्रकार)।
4. इस शैली में प्रमुख रंगहरा एवं पीला का प्रयोग किया गया।
5. इस शैली में पुरूष आकृति व वेशभूषा पुरूषों मे पुष्ट कलेवर, नंद एवं बालगोपालों को भावपूर्ण चित्रण हुआ करता था।
6. इस शैली में नारी आकृति व वेशभूषा छोटा कद, तिरछी एवं चकोर के समान आँखे, शारीरिक स्थूलता एवं भावों में वात्सल्य की झलक बनाई जाती थी।

विशेष तथ्य

- इस चित्रशैली मे पिछवाई एवं भित्ती चित्रण प्रमख है।
- इस चित्रशैली मे गाय, केले के वृक्षों को प्रधानता दी गई है।

देवगढ़ उपशैली

1. इस शैली के समय में प्रमुख विषयशिकार के दृश्य, राजसी ठाट-बाट, श्रृंगार, प्राकृतिक दृश्य।
2. इस शैली के प्रमुख चित्रकार कँवला, चोखा, बैंजनाथ थे।
3. इस शैली में प्रमुख रंगपीले रंगों का बाहुलता से प्रयोग किया गया।

विशेष तथ्य-

- यह शैली मारवाड़, जयपुर व मेवाड़ की समन्वित शैली है।
- इस शैली को सर्वप्रथम डॉ. श्रीधर अंधारे ने प्रकाशित किया।
- महाराणा जयसिंह के समय रावत द्वारिका दास चूंडावत ने देवगढ़ ठिकाना (राजसमंद) 1680 ई. में स्थापित किया तदुपरान्त देवगढ़ शैली का जन्म हुआ।

चावण्ड उपशैली

1. इस शैली के प्रमुख शासक महाराणा प्रताप एवं महाराजा अमरसिंह थे।
2. इस शैली के प्रमुख चित्रकार नसीरदी (निसारदी) थे।
3. इस शैली का प्रमुख चित्रित ग्रंथ 'रंगमाला' था।

मारवाड़ शैली

राजस्थान चित्रशाला के मारवाड़ स्कूल को निम्नलिखित चित्र उपशैलियों में विभाजित किया गया है।

जोधपुर उपशैली

1. जोधपुर शैली के प्रमुख शासक महाराजा जसवंत सिंह एवं महाराजा मानसिंह थे।

अजमेर उपशैली

1. इस शैली के प्रमुख चित्रकार चाँद, नबला, तैयब, रायसिंह, लालजी व नारायण भाटी एवं एक महिला चित्रकार साहिबा थे।
2. इस शैली में प्रमुख रंगसुहानी रंग योजना (लाल, पीले हरे, नीले के साथ बैंगनी रंग का विशेष प्रयोग होता है।)
3. इस शैली के प्रमुख आकृतिलंबे एवं वीरोचित गुणों से युक्त पुरुष, गोल आँखे, लंबी जुल्फें, बाँकी एवं छल्लेदार मूंछे।
4. इस शैली मेंनारी आकृति आकर्षक महिलाएँ लंबे, घने एवं काले बाल, पैनी अंगुलियाँ, लहंगा, बसेड़ा एवं आकर्षक आभूषण चित्रित किया गया है।

जैसलमेर उपशैली

1. इस शैली के प्रमुख शासक महारावल हरराज, अखैसिंह व मूलराज थे।
2. इस शैली के प्रमुख चित्रमूमल है।
3. इस शैली मेंपुरुष आकृति पुरुषों के मुख पर दाढ़ी-मूंछ, तथा मुखाकृति ओज व वीरता से पूर्ण चित्रित किया गया है।
4. इस शैली में नारी आकृति खिंचे हुए यौवन दीप्ति से परिपूर्ण मुख ।

नागौर उपशैली

- इस शैली के प्रमुख चित्र एवं विषय इस शैली में जोधपुर, बीकानेर, अजमेर मुगल एवं दक्षिण शैलियों का मिश्रित रूप मिलता है।
- इस शैली में बुझे हुए रंगों का प्रयोग अधिक हो गया है।
- इस शैली मे लंबी नाक, छोटी आँख, चपटे ललाट वाली नायिका का चित्रण मिलता है।
- पारदर्शी वेशभूषा इस शैली की अनूठी विशेषता है।

विशेष तथ्य-

- मारवाड़ शैली का दूसरा प्रमुख केन्द्र। व्यक्ति चित्रण की परम्परा
- शैली का सही और सर्वाधिक स्वरूप नागौर किले के महलों के भित्ति चित्रों में।
- नागौर किले में भित्ति चित्रों की सजावट राजा बख्तसिंह के समय।

ढूँढाड़ शैली

राजस्थानी चित्रशैली का ढूँढाड़ स्कूल केवल जयपुर शहर तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसके आस-पास के नगरों में भी विस्तृत है। ढूँढाड़ स्कूल की चित्रशैलियों को निम्नलिखित भागो में वर्गीकृत किया जा सकता है-

जयपुर उपशैली

1. इस शैली में प्रमुख शासक सवाई प्रतापसिंह थे ।
2. इस शैली के प्रमुख चित्रित ग्रंथ आदमकद चित्र, शिकार, युद्ध प्रसंग, कृष्ण लीला, रागमाला, महाभारत, रामायण, गीत-गोविंद परआधारित चित्र।
3. इस शैली के प्रमुख चित्रकार साहिबराम, मोहम्मद शाह, सालिगराम, रामजीदास, रघुनाथ, लालचंद, गंगाबख्श थे।
4. इस शैली के प्रमुख रंग केसरिया पीला, हरा एवं लाल रंग प्रयोग किया गया है।
5. इस शैली मेंपुरुष आकृति चेहरा साफ, हाथ में तलवार, पगड़ी, कुर्ता, जामा, चोगा, अंगरखी, पटका एवं जूते पहने हुए चित्रित किया गया है।
6. इस शैली मेंस्त्री आकृति बड़ी मछली जैसी आँखे, लंबे बाल, अंडाकार चेहरा, उठी हुई भौंहे, छोटा कद, चोली, कुर्ता, दुपट्टा, बेसर, लहंगा, कामदार जूतियाँ, पहने हुए।

विशेष तथ्य

- जयपुर चित्रशैली की मुख्य विशेषता आदमकद, बड़े पोट्रेट एवं भित्ति चित्रण है। साहिबराम चित्रकार ने ईश्वरी सिंह का आदमकद चित्र बनाया।
- जयपुर शैली पर 'मुगल शैली' का सर्वाधिक प्रभाव दिखाई देता है।
- इस चित्रशैली में पीपल, बड़, घोड़ा व मयूर एवं नीले बादलों का अंकन मुख्य विशेषत रही है।
- इसमें चांदी, सोना जस्ता व मोतियों का प्रयोग।
- असावरी रागिनी-जयपुर शैली का शबरी का चित्र जिसमें उसके केशों, अल्प कपड़ों व चन्दनके वृक्षों का चित्रण

अलवर उपशैली

1. इस शैली के प्रमुख शासक महाराजा विनयसिंह थे।
2. इस शैली के प्रमुख चित्रित ग्रंथ एवं विषय 'चंडी पाठ' एवं 'दुर्गा सप्तशती- कृष्ण चरित्र, रामचरित्र, दरबार, संगीत, नायिकायें आदि।
3. योगासन इस चित्र शैली का सबसे प्रमुख विषय रहा है।
4. इस शैली के प्रमुख चित्रकार डालचंद, नानगराम, बलदेव, बुद्धराम, गुलामअली सालगा थे।
5. इस शैली में प्रमुख रंगहरे, नीले एवं सुनहरे रंगों का प्रयोग किया गया है।
6. इस शैली में पुरुष आकृति गले में रूमाल, कमर तक अंगरखा, एवं जयपुर जैसी पगड़ी चित्रित किया गया है।
7. इस शैली में नारी आकृति मछली के समान आँखे, पान की पीक से सने होंठ, कमान की तरह तनी हुई भौंहे, गोल मुँह, ठिगना कद आदि।

विशेष तथ्य

- अलवर चित्रशैली की सबसे प्रमुख विशेषता 'गणिकाओं के चित्र' है।
- यह चित्रशैली ईरानी, मुगल एवं जयपुरी शैली का समन्वित रूप है।
- इस शैली मे हाथी दाँत पर चित्र बनाने के लिए मूलचंद नामक चित्रकार प्रसिद्ध है।
- यह शैली बार्डर चित्रण के लिए प्रसिद्ध।
- विनयसिंह के काल में संत शेख सादी की पुस्तक गुलिस्तां की पांडुलिपी को भारतीय फारसी शैली में गुलाम अली ने चित्रांकित किया था।

दुगारी उपशैली

- नैनवा (बूंदी) के पास स्थित सीताराम मंदिर की चित्रशाला मे चित्रांकित शैली।
- चित्रों में स्वर्णकलम का प्रयोग, भगवान राम केन्द्रित चित्र प्रधानता।
- वनस्पति रंग की प्रधानता वाली शैली।
- प्रमुख चित्र मत्स्यावतार व कश्यपावतार।

नोट- एकमात्र चित्रशैली जिसमें चित्रकार स्वयं ही चित्र के नीचे शीर्षक लिखता है जैसे-'राम जी झुलों झुलें है।

वृक्ष	चित्रशैली
कदम्ब	उदयपुर शैली
केला	किशनगढ़ शैली
खजूर	कोटा, बूंदी शैली
पीपल, वट	अलवर, जयपुर शैली
आम	जोधपुर, बीकानेर शैली;

आंखों की बनावट	चित्र शैली
आंखे हिरण के समान	नाथद्वारा शैली
आंखे खंजर के समान	किशनगढ़ शैली
आंखे बादाम के समान	जोधपुर शैली
ऊपर-नीचे के रेखा सामांतर	बूंदी शैली
आंखे मछली के समान	उदयपुर, जयपुर शैली
आंखे कमान के समान	किशनगढ़ शैली

पशु-पक्षी	चित्रशैली
कौआ, चील, ऊँट, घोडे	जोधपुर, बीकानेर शैली
हाथी व चकोर	उदयपुर शैली
गाय	नाथद्वारा शैली
मोर व घोड़ा	जयपुर,अलवर शैली

शैली	रंग
मारवाड़, देवगढ़, बीकानेर	पीला
नाथद्वारा	पीला-हरा
अजमेर	पीला-लाल-हरा-बैंगनी
किशनगढ़	श्वेत, गुलाबी
मेवाड़	पीला-लाल
कोटा	पीला-हरा-नीला
बूंदी	हरा
जयपुर	केसरिया, हरा, लाल

चित्रकला के विकास हेतु कार्यरत संस्थाएं	
संस्था	**स्थान**
चितेरा	जोधपुर
धोरां	जोधपुर
तूलिका कलाकार परिषद	उदयपुर
टखमण -24	उदयपुर
कलावृत	जयपुर
पेंग	जयपुर
आयाम	जयपुर
क्रिएटिव आर्टिस्ट ग्रुप	जयपुर
अंकन	भीलवाड़ा

राजस्थानी चित्रकला संग्रहालय	
पोथीखाना	जयपुर
पुस्तक प्रकाश	जोधपुर
सरस्वती भण्डार	उदयपुर
जैन भण्डार	जैसलमेर
कोटा संग्रहालय	कोटा
अलवर संग्रहालय	अलवर

ललित कला के विकास से संबंधित प्रमुख संस्थाएं

ललित कला अकादमी -जयपुर

- स्थापना 24 नवम्बर 1957
- कलात्मक गतिविधियों का संचालन कला प्रदर्शनियों का आयोजन तथा कलाकारों को फैलोशिप प्रदान करना) प्रमुखकार्य
- राजस्थान की दृश्य / तथा शिल्प कला की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन।
- राज्य में सांस्कृतिक एकता स्थापित करना।

राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स- जयपुर

- स्थापना -1857
- जयपुर महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय द्वारा स्थापित तब इसकानाम मदरसा-हुनरी था।
- स्वतंत्रता के बाद इसका नाम राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्डक्राफ्ट्स।
- वर्तमान में मूर्तिकला तथा चित्रकला से संबंधित डिप्लोमा करवाया जाता है।

जवाहर कला केन्द्र-जयपुर

- स्थापना- 8 अप्रैल 1993
- उद्घाटन -शंकर दयाल शर्मा (तत्कालीन राष्ट्रपति)
- राजस्थान की समृद्ध कला परम्परा के संवर्धन लोक मानस में) बिखरी सांस्कृतिक विरासत एवं मरुधरा की अनमोल धरोहर के सरंक्षण हेतु।

मुख्य तथ्य-

सुरजीत सिंह चोयल (जयपुर)-राजस्थान की पहली महिला चित्रकार।

हरिराम सोनी-चावल पर चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध।

- श्री कुन्दन लाल मिस्त्री को राजस्थान में आधुनिक चित्रकला को आरम्भ करने का श्रेय।
- कृष्णा कनाही राजस्थानी चित्रकार है जिन्हें पदम पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

नाथद्वारा-श्रीनाथ जी का पाना सबसे अधिक कलात्मक। हाडौती में शैल चित्रों को खोजने का काम सर्वप्रथम वर्ष 1953 में पद्म श्री डॉ. विष्णु श्रीधर वाकण धर ने किया।

राम गोपाल विजय वर्गीय - जन्म-1905, बालेर (सवाई माधोपुर)। परम्परा वादी चित्रकार। सर्वाधिक प्रिय विषय नारी चित्रण। राजस्थान में एकल चित्रण प्रदर्शनी प्रारम्भ करने का श्रेय। राजस्थान स्कूल आर्ट के प्राचार्य रह चुके। पदमश्री 1984 ई. ।

भूरसिंह शेखावत - जन्म-1914 धोंधलिया (बीकानेर)। खाना बनाती स्त्री सब्जी तोलती मालिन, सारंगी बाजते कलाकार, राष्ट्रभक्त नेता, शहीद, क्रांतिकारी, लौह पुरुष आदि इनके प्रमुख चित्र।

• हस्तशिल्प / हस्तकला

1. **ब्लू पॉटरी** - चिनी - मिट्टी के बर्तनों पर नीले रंग से चित्रकारी करना।
- यह कला मूल रूप से पर्शिया ईरान की हैं ।
- राजस्थान में इसे लाने का श्रेय मानसिंह को हैं ।
- इस कला का सर्वाधिक विकास जयपुर शासक रामसिंह द्वितीय के समय हुआ था ।
- इस कला को पुर्नजिवित करने का श्रेय कृपाल सिंह शेखावत को है जिनका जन्म स्थान सीकर जिला हैं ।
- कृपाल सिंह शेखावत को 1974 में पदम् श्री पुरस्कार दिया जा चुका हैं ।
- ब्लू पॉटरी की एकमात्र महिला कलाकार नाथी बाई हैं।

2. **ब्लेक पॉटरी** - ब्लेक पॉटरी कोटा की प्रसिद्ध हैं ।
3. **कागजी पॉटरी**:- कागजी पॉटरी अलवर की प्रसिद्ध हैं ।
4. **मोलेला पॉटरी**:- मोलेला पॉटरी राजसमन्द की प्रसिद्ध हैं ।
5. **बिकानेरी पॉटरी**:- इस पॉटरी में लाख का प्रयोग किया जाता हैं ।

मीनाकारी

- सोने चाँदी के गहनों पर मीना जड़ाई का कार्य मीनाकारी कहलाता हैं ।
- यह कला लाहौर से लायी गई थी मानसिंह के समय ।
- यह जयपुर की प्रसिद्ध हैं ।
- सरदार कुदरत सिंह को 1988 में इस काल के लिए पद्म श्री पुरस्कार प्राप्त हो चुका हैं ।

थेवा कला -

- थेवा का अर्थ हैं - सेटिंग
- आभुषणों पर किमती काच के टुकड़ों को सेट करना
- इस कला का प्रारम्भ आज से 500 वर्ष पूर्व सावंत सिंह के समय प्रतापगढ़ में हुआ था ।
- इसके जन्मदाता नाथुलाल सोनी थे ।
- इसमें प्रयुक्त काच को बेल्जियम से मंगाया जाता हैं ।

रत्नाभुषण -

- हीरे - जवाहारात-पन्ना का कार्य रत्नाभुषण कहलाता हैं ।
- विश्व की सबसे बड़ी मण्डी जयपुर हैं ।

कोफ्तगिरी -

- फोलाद से बनी वस्तुओं पर सोने के पतले तारों से जड़ाई को ही कोफ्तगिरी कहते हैं ।
- राजस्थान में इसके प्रमुख केन्द्र जयपुर व अलवर हैं ।

बादला

- जस्ते से निर्मित पानी की बोतल जिसके चारों तरफ रंगीन कपड़ा लगा हुआ होता हैं उसे बादला कहते हैं ।
- यह जोधपुर के प्रसिद्ध हैं ।

बंधेज

- बधेज के लिए जयपुर, जोधपुर व शेखावाटी प्रसिद्ध हैं ।
- जयपुर के लहरिये बंधेज के लिए प्रसिद्ध हैं ।
- जोधपुर के बंधेज के साफे प्रसिद्ध हैं ।
- शेखावाटी के पाटोदा के बंधेज के लुगड़े प्रसिद्ध हैं ।

रंगाई

1. **अजरख प्रिंट** - यह बालोतरा की प्रसिद्ध हैं ।
- इसमें लाल व काला रंग अधिक प्रयुक्त होता है।

2. **मलीर प्रिंट बालोतरा** :- इसमें कत्थई व काला रंग प्रयुक्त होता हैं ।
3. **सांगानेरी प्रिंट जयपुर** :- इसमें कृत्रिम रंगों का प्रयोग होता हैं ।
4. **बगरू प्रिंट जयपुर ग्रामीण** :- इसमें पेड़-पौधों से प्राकृतिक रंगों का उपयोग होता हैं ।

5. **जाजम प्रिंट - अकोला चित्तौड़गढ़**
- इसमें दोनों तरफ से छपाई. की जाती हैं।
- यह छपाई दाबु पिंरट के नाम से प्रसिद्ध हैं।
- दाबु का तात्पर्य हैं - दबाना
- सवाईमाधोपुर में मोम का दाबु प्रसिद्ध हैं।
- गेंहु का बिंछण सांगानेर, बगरू का प्रसिद्ध हैं।
- मिट्टी का दाबु बालोत्तरा (बाड़मेर) का प्रसिद्ध हैं।

गलीचा

- यह कला मूर रूप से ईरान की हैं ।
- राजस्थान में इसका प्रसिद्ध केन्द्र जयपुर व टोंक हैं ।

नमदे - यह मुख्य रूप से टोंक व बीकानेर का प्रसिद्ध है।

दरियाँ - दरियों के लिए नागौर प्रसिद्ध हैं तथा दौंसा का लवाणा गाँव भी प्रसिद्ध हैं ।

पत्थर की मूर्तियाँ

- यह डुंगरपुर व बाँसवाड़ा के तलवाड़ा की प्रसिद्ध हैं ।
- यहा परेवा पत्थर से मूर्तियाँ बनाई जाती हैं ।

प्रमुख रचनाकार	रचनाएँ
एल पी टेस्सितोरी	ए डिस्क्रीप्टिव केटलोग ऑफ दि बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल क्रोनिक
विलियम फ्रैंकलिन	मिलट्री ममोयर्स ऑफ जार्ज टोमस
फारेस्ट जी. डब्ल्यु	ए हिस्ट्री ऑफ दि इण्डियन म्युटिनी
बर्नियर	ट्रेवल्स इन दि मुगल एम्पायर
वी.पी. मेंनन	दि स्टोरी ऑफ दि इंटीग्रेशन ऑफ दि इण्डियन स्टेट्स
टॉमस रो	दि एम्बेसी ऑफ सर टॉमस रो टू दि कोर्ट ऑफ दि ग्रेट मुगल

❖ राजस्थानी साहित्य से सम्बन्धित संस्थाएं

➢ **राजस्थान राज्य अभिलेखागार:-**
- स्थापना - बीकानेर
- सन् 1955 (जयपुर) में थी।
- (1960) में बीकानेर में स्थानांतरित कर दिया गया।
- राज. के इतिहास एवं संस्कृति के विभिन्न स्त्रोतों को सुरक्षित रखना।

➢ **राजस्थान साहित्य अकादमी**
- मुख्यालय - उदयपुर
- स्थापना - 1958 ई.
- चर्चित पुस्तक - मधुमति (मासिक)
- संस्था द्वारा दिये जाने वाला श्रेष्ठ पुरस्कार - "मीरा पुरस्कार"
- प्रथम मीरां पुरस्कार - रामानंद तिवारी (1959-60)

➢ **राजस्थान भाषा साहित्य / संस्कृति अकादमी**
- मुख्यालय - बीकानेर
- स्थापना - 1983 ई.
- चर्चित पुस्तक - "जागती जोत"
- श्रेष्ठ पुरस्कार - सूर्यमल्ल मिश्रण पुरस्कार
- यह पाण्डुलिपियां प्राचीन पुस्तकों पर शोध का कार्य करती हैं।

➢ **राजस्थान हिन्दी अकादमी ग्रंथ**
- मुख्यालय - जयपुर
- स्थापना - 1969 ई. (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 के तहत)
- यह संस्था भारत सरकार के मानव संसाधन के अन्तर्गत कार्य करती हैं।
- विश्वविधालयी स्तर की पुस्तकों का प्रकाशन करवाती हैं।
- संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट दी जाती हैं।

➢ **राजस्थान संस्कृत अकादमी:-**
- मुख्यालय - जयपुर
- स्थापना - 1980 ई.
- सर्वोच्च पुरस्कार - "माघ" पुरस्कार
- पत्रिका - स्वरमंगाला
- यह संस्था संस्कृत भाषा को जनमानस में लोकप्रिय बनाने, संस्कृत मौलिक लेखन को प्रोत्साहन, राजस्थान में उपलब्ध संस्कृत साहित्य को प्रकाशित करने तथा नवोदित प्रतिभाओं को प्रकाश में लाने का कार्य कराती हैं।

➢ **राजस्थान बृज भाषा अकादमी**
- मुख्यालय - जयपुर
- स्थापना - 19 जनवरी 1986 में (भरतपुर)
- बृज भाषा के साहित्य व शोध को बढ़ावा देने के लिए स्थापित।
- मासिक पुस्तक - बृज शतदल

➢ **राजस्थान उर्दू अकादमी:-**
- मुख्यालय - जयपुर
- स्थापना - 1979 ई.
- संस्था उर्दू भाषा के साहित्य व शोध को बढ़ावा देने के लिए स्थापित की गई।
- पत्रिका - नखलिस्तान (त्रैमासिक पत्रिका)

➢ **राजस्थान सिंधि अकादमी:-**
- मुख्यालय - जयपुर
- स्थापना - 1979 ई.
- कार्य - यह संस्था सिंधी भाषा के साहित्य व शोध को बढ़ावा देने के लिए स्थापित की गई।
- पुस्तक - रिहाण, सिन्धुदुत

➢ **मौलाना अबूल कलाम आजाद फारसी शोध संस्थान:-** "कसरै इल्म"
- मुख्यालय - टोंक
- स्थापना - 1978 ई.
- संस्था अरबी फारसी भाषा के साहित्य व शोध को बढ़ावा देने के लिए स्थापित की गई।
- इस संस्थान का वर्तमान नाम सन् 1987 में रखा गया।

➢ **श्री राम चरण प्राच्य विधापीठ एवं संग्राहलय:-**
- मुख्यालय - जयपुर
- स्थापना - 1960 ई. में

➢ **नगर श्री लोक संस्कृति शोध संस्थान:-**
- मुख्यालय - चुरू
- स्थापना - 1964 ई.
- मुख्य आकर्षण स्थानीय "मुडिया लिपि" को संरक्षित करना।
- मुड़िया लिपी शेखावटी व बीकानेर अंचल की प्राचीन लिपी हैं।

➢ **पं. झाबर मल्ल शर्मा शोध संस्थान:-**
- मुख्यालय - जयपुर
- स्थापना 2000 ई.

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/ny6pbb 1 web.- https://shorturl.at/liVKO

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 483+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
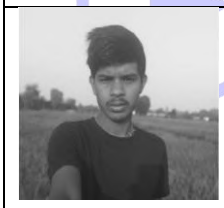	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

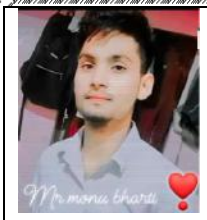	**MONU S/O KAMTA PRASAD**	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
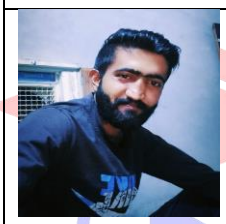	**Govinda Jangir**	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/ny6pbb

Online Order करें - *https://shorturl.at/liVKO*

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE